104 वां अंक | अवधि : छमाही

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वातायन

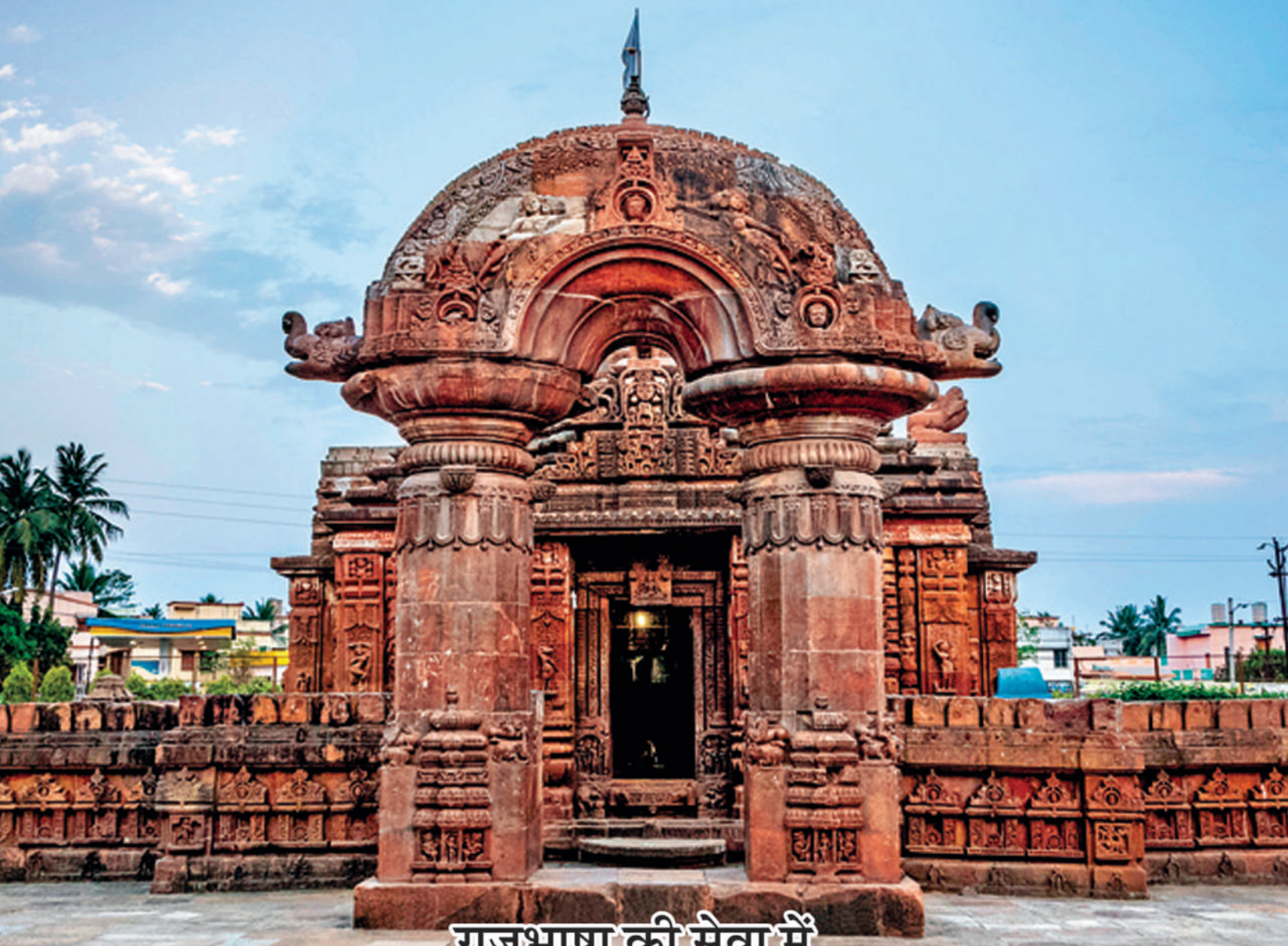

राजभाषा की सेवा में

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर – 751001

नराकास द्वारा प्रत्रिका हेतु कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

वातायन

(अक्तूबर 2022 से मार्च 2023)

अंक: 104 • अवधि : छमाही

सत्यमेव जयते

राजभाषा की सेवा में

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर – 751001

वातायन पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री अनंत किशोर बेहेरा

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)ओड़िशा, भुवनेश्वर

संरक्षक

श्री श्रीराज अशोक

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)

प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

सुश्री एस. अरुणा

उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री पी. असोकन

उप महालेखाकार (निधि)

संपादक

डॉ. मंजेश परासर

हिंदी अधिकारी

सहयोग

श्री अभिषेक कुमार

सहायक लेखा अधिकारी

श्री शिवानंद

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुनीता देवी

कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

अहिंदी भाषा-भाषी प्रांतों के लोग भी सरलता से टूटी-फूटी हिंदी बोलकर अपना काम चला लेते हैं । -अनंतशयनम् आयंगार

अनंत किशोर बेहेरा
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)

मुख्य संरक्षक की कलम से...

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका 'वातायन' का 104 वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य को बहुत ही रुचिकर ढंग से पूरा करती हैं। किसी देश की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को भाषा के माध्यम से ही संजोया जा सकता है। समाज का स्वरूप व आइना वह भाषा होती है जो देश को एकता एवं अखंडता के धागे में बांध कर रखती है।

'वातायन' पत्रिका ने हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यालय में कार्यरत समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रदत्त रचनाएँ उनकी उत्सुकता, रचनात्मक कला एवं हिंदी के प्रति उनके रुझान का प्रतिफल है।

मैं 'वातायन' पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल व सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ जिनके प्रयास से इस पत्रिका को मूर्त रूप प्रदान किया जा सका है। साथ ही पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

ए के वैहेरा

(अनंत किशोर बेहेरा)

हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है । –धीरेंद्र वर्मा

श्रीराज अशोक
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

संरक्षक की कलम से...

हमारे कार्यालय की पत्रिका "वातायन" के 104 वें अंक के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह कार्यालय के सभी रचनाकारों तथा पत्रिका सम्पादन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति अटूट प्रेम एवं समर्पण का परिणाम है कि हम पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता बनाने में सफल रहे हैं।

पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक लघु प्रयास है। वातायन पत्रिका कार्यालय में होने वाले हिन्दी के कामकाज, विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यालय में होने वाले अभिनव प्रयासों की एक झलक प्रस्तुत करती है। साथ ही, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने आम जीवन, कार्यालयीन अनुभवों को साझा करने का एक मंच प्रदान करती है। आशा है कि **"वातायन"** पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य निरंतर जारी रहेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(श्रीराज अशोक)

हिंदी जानने वाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है । -देवव्रत शास्त्री

डॉ. मंजेश परासर
हिंदी अधिकारी

संपादक की कलम से

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'वातायन'का 104 वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालयीन पत्रिकाएं कार्मिकों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ–साथ कार्यालय में हो रहे सकारात्मक परिवर्तनों को भी उद्घाटित करती हैं। **'वातायन'** पत्रिका का यह अंक राजभाषा की समृद्ध विरासत को निरंतरता प्रदान करते हुए निश्चित रूप से कार्मिकों में राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी भरेगा।

राष्ट्र के एकीकरण तथा समृद्धि में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी ने एक धागे की भांति, विविधताओं से भरे इस राष्ट्र को पुष्पमाला का स्वरूप प्रदान किया है। अत: राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण अंग होने के नाते हमारा यह दायित्व है कि राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति में अपना योगदान देते रहें। इस दिशा में हमारे सूक्ष्म प्रयास भी राजभाषा की प्रगति में सहायक सिद्ध होंगे।

पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने विभिन्न विषयों जैसे; भाषा, दर्शन, पर्यटन, संस्मरण, कार्यालयीन अनुभव एवं समसामयिक मुद्दों पर रोचक लेख एवं कविताओं से पत्रिका को सुसज्जित किया है जिसे पढ़कर पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे और कुछ नया सीखने को पाएंगे।

राजभाषा पत्रिका **'वातायन'** के इस नवीनतम अंक के प्रकाशन में योगदान देने हेतु मैं सभी रचनाकारों एवं संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ। तथा पाठक गण से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझावों से हमें अवगत कराएं जिससे पत्रिका को और अधिक स्तरीय बनाया जा सके। पत्रिका की प्रगति एवं उद्देश्यपूर्ति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. मंजेश परासर)

अब हिंदी ही माँ भारती हो गई है, वह सबकी आराध्य है, सबकी संपत्ति है । - रविशंकर शुक्ल

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठांक
1.	क्या आप आलसी हैं ?	सोनु कुमार	7
2.	भाषा का द्वन्द	डॉ. मंजेश परासर	8
3.	मोबाइल का नशा	संजीव कुमार दुबे	11
4.	सफलता	मुकेश कुमार – II	13
5.	मनुष्य वह है, जो औरों को जीवन देता है	रवि कुमार	15
6.	सुलेमान राजा की बुद्दिमत्ता	प्रभा कांगरी	17
7.	फैसला हो तो ऐसा	शांतिलता सेठी	19
8.	जगन्नाथ मंदिर, पुरी	सोनी कुमारी साव	22
9.	किस्मत का खेल	सुकुमार बेहरा	25
10.	मुस्कुराओ भी	प्रदीप कुमार	29
11.	पतझड़	ओम प्रकाश	30
12.	खुद की तलाश कर पाना मुश्किल है..	शिवानंद	31
13.	नि:स्वार्थ चला–कर	विनोद कुमार	32
14.	निजीकरण सही या गलत और राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन योजना की प्रासंगिकता	रवि कुमार	33
15.	सेवानिवृत्ति लाभ	मनोरंजन पाणिग्राही	36
16.	एक ए.सी., एक पेड़ और बहुत सी चिड़ियाँ	अभिषेक कुमार	40
17.	पिता	शुभेन्दु रंजन नायक	43

हिंदी भाषा का सौंदर्य ही कुछ विलक्षण है । मुझे विश्वास है कि एक दिन आएगा, जब हिंदी विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी । -सुमित्रानंदन पंत

क्या आप आलसी हैं ?

सोनु कुमार
लेखाकार

एक व्यापारी व्यापार करने के लिए एक शहर से दूसरे शहर जाता था रास्ते के बीच में रेगिस्तान का कुछ इलाका पड़ता था। वह आदमी एक निगेटीव सोच वाला इंसान था। हमेशा शिकायत करता रहता था कि मेरे पास ये नहीं है वो नहीं है इसकी कमी है उसकी कमी है।

एक दिन वह रेगिस्तान से गुजर रहा था कि तभी उसकी पानी की बोतल खाली हो जाती है, उसे बहुत जोर से प्यास लगती है। लेकिन रेगिस्तान में पानी ना मिलने की वजह से उसे बहुत गुस्सा आता है और बोलता है कि कितना खराब जगह है ना कोई पेड़ है, ना पानी है, रास्ता भी लम्बा है, रेगिस्तान पार करना पड़ता है।

तभी आसमान की तरफ देख कर कहता है कि भगवान ये कैसी जगह बना दी है आपने। अगर मेरे पास में बहुत सारा पानी होता, बहुत सारे संसाधन होते तो इस जगह पर हरियाली कर देता बहुत सारे पेड़ लगा देता। वह आदमी उपर देखकर ये सब बातें कह रहा होता है और ऐसा लग रहा था कि जैसे उपर वाले से जवाब की प्रतीक्षा कर रहा हो कि भगवान कुछ कह दे।

अब चमत्कार यह हुआ कि उसने जैसे ही नीचे देखा उसे अपनी आँखों के सामने एक कुआँ दिखाई दिया । वह पूरी तरह से घबरा गया, क्योंकि उसने कभी उस रेगिस्तान में कुआँ नहीं देखा था।

वह कुएँ के पास पहुँचा और देखा कि कुआँ पूरी तरह पानी से भरा हुआ है परन्तु वह आदमी निगेटीव सोच वाला था और हमेशा शिकायत करता रहता था और फिर से आसमान की तरफ देखते हुए बोला भगवान पानी से भरा हुआ कुआँ तो दे दिया लेकिन पानी निकालूंगा कैसे ? तो इस बार जब उसने नीचे देखा तो फिर से चमत्कार हुआ उसे कुएँ के पास रस्सी और बाल्टी दिखाई दी लेकिन आदमी ने फिर से उपर देखा और बोला भगवान अब इस पानी को ले जाउँगा कैसे।

तभी उसको अहसास हुआ जैसे उसके पीछे कोई है उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक उंट खड़ा पाया । वह पूरी तरह से घबरा गया और सोचने लगा कि ये तो सच में होने लग रहा है। मैंने बातो-बातो में क्या कह दिया ? अब मुझे यहाँ हरियाली करनी पड़ेगी और पेड़ लगाने की जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी।

आदमी को पानी से भरा हुआ कुआँ मिल गया, बाल्टी और रस्सी मिल गयी, पानी को ले जाने के लिए उँट भी मिल गया, सब कुछ मिल गया। अब वह आदमी सोच रहा था की ये मैने बातों-बातो में क्या बोल दिया ये तो गड़बड़ हो गया। अब वह तेजी से दौड़कर भागने लगा। वह भाग कर उस जिम्मेदारी से बच रहा था, तभी एक कागज उड़ते हुए आया और उसके शरीर से चिपक गया।

उसने जब उस कागज को देखा तो उस पर लिखा हुआ था कि मैंने तुम्हें पानी दिया, कुआँ दिया, रस्सी और बाल्टी दिया, पानी को ले जाने के लिए साधन दिया फिर भी क्यों बचकर भाग रहे हो ? उस आदमी को लगा कि मेरे साथ पता नहीं क्या हो रहा है ? उसने दौड़ते-दौड़ते रेगिस्तान को पार कर लिया लेकिन उसने रेगिस्तान को हरा भरा नहीं बनाया।

यह कहानी हमें सिखाती है की हम में से बहुत सारे लोग ये कहते है कि बड़े स्कूल में पढ़ लिया होता या बड़े कॉलेज मे चला गया होता तो ये कर लेता, अगर मेरे पास बहुत सारा पैसा होता तो ये कर लेता, मेरा बॉस मेरा साथ नहीं देता है नहीं तो मै पता नहीं क्या कर देता। हम हमेशा शिकायतें ढूढ़ा करते हैं, जबकि हम अपनी जिम्मेदारी से बचकर भाग रहे होते हैं। ये कहानी हमें सिखाती है कि जीवन में हम जो कुछ भी कर रहे है शत-प्रतिशत जिम्मेवारी हमारी है कि प्रत्येक काम को बिना किसी शिकायत के पूर्ण करे और दूसरो पर दोष देना, उनकी गलतियाँ बताना बंद की जिये, अपनी गलतियों को सुधारना शुरु कीजिए। ●

हिंदी भाषा अपनी धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है । –छविनाथ पांडेय

भाषा का द्वन्द

डॉ. मंजेश परासर
हिंदी अधिकारी

भाषा सोच एवं विचारो की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है। भाषा को मुख्यत: दो तरह से अभिव्यक्त किया जाता है (i) मौखिक और (ii) लिखित। कई बार संकेतो के माध्यम से भी संवाद संप्रेषण किया जाता है। विचार-विनिमय के कोई भी साधन अभिव्यक्ति के माध्यम अर्थात भाषा की संज्ञा में ही आते है।

जैसा कि विदित है कि भारत विविधाताओं से भरा देश है तथा यह विविधता भाषओं मे भी है हमारे देश में सर्वाधिक भाषाएं तथा बोलियाँ है तथा सभी हमारे देश का गौरव है, अभिमान हैं, परन्तु जब राष्ट्र स्तर की बात आती है तो सभी भाषाओं में से किसी एक को ही यह स्थान प्राप्त हो सकता है। आजादी के पश्चात जब शासन की भाषा को लेकर काफी गहन विचार-विमर्श किया गया तो एक राष्ट्र एक भाषा की बात आयी। राष्ट्र के स्तर पर एक भाषा का चयन कितना मुश्किल रहा होगा इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि प्रत्येक भाषा अथवा बोली आपने-आप में एक सभ्यता एक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और सभी समान रूप से महत्वपूर्ण है परंतु सभी भाषाएं एक साथ फले-फूले तथा इन्हें सहेजा जाए, यह भी आवश्यक है। राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखने वाली भाषा, जो भारत की सभी भाषाओं तथा बोली से पोषित होती हो तथा उसका विकास अन्य सभी भाषाओं के विकास में भी सहायक हो, का चयन करना इतना आसान नहीं था। लेकिन गहन विचार-विमर्श के बाद हमारे संविधान निर्माताओ को हिन्दी में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता दिखी और 14 सितंवर 1949 को संविधान सभा ने सर्वसम्मति से हिन्दी को भारत की राजभाषा का उत्तरदायित्व सौंपा। लेकिन इसका मतलब यह कतई नही था कि अन्य भाषाएं गौण थी। भारत की सभी भाषाएं हिन्दी की सहेलियां है जो हिन्दी को मजबूती प्रदान करती है।

लेकिन मेरे मन में अक्सर यह विचार आता है कि जब इतने विचार-विमर्श के बाद हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया फिर आजादी के इतने बर्षो के बाद भी हिन्दी देश में अपना स्थान क्यों नही बना पा रही जबकि वैश्विक स्तर पर हिन्दी काफी व्यापक हो रही है।

हिन्दी को संविधान में स्थान तो मिला पर हमारे दिलों में नही, आज भी हम हिन्दी का प्रयोग करना नही चाहते। हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि क्या वास्तव में हम अंग्रेजी को छोड़ना चाहते है। इसका मतलब यह कतई नही है कि अंग्रेजी सीखना छोड़ दें। भाषा कोई भी हो हमारे व्यक्तित्व को उन्नत ही करती है परन्तु मातृभाषा तथा राजभाषा व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनो को समुन्नत करती है तथा इन दोनो के बाद ही किसी और भाषा को सीखा जा सकता है। हिन्दी को शासन की भाषा संविधान में कहा तो गया परंतु व्यवहार में हिन्दी अब तक नही आ सकी। शासन की भाषा वह होती है जो आमजन तथा शासन के बीच की दूरी कम करें तथा शासन के कार्यो को सरल शब्दो में आमजन तक पहुँचाए ताकि एक सामान्य नागरिक भी शासन द्वारा किए जाने वाले कार्य को जान सके तथा समझ सके। शासन की भाषा सरल होने की बात कही तो जाती है पर क्या वास्तव में ऐसा है? आज भी शासन की भाषा चाहे

प्रान्तीय ईर्ष्या -द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी किसी चीज से नहीं मिल सकती । -सुभाषचंद्र बोस

आदेश हो या नियम एक सामान्य नागरिक की समझ से परे है। क्या यह भी एक कारण हो सकता है कि शासन के अच्छे कार्य को भी कुछ लोगो द्वारा तोड़-मरोड़कर नुकसानदायक बता दिया जाता है क्योंकि शासन की भाषा ही आमजन की समझ से परे है? हो सकता है कि शासन की भाषा सरल होने की स्थिति में नागरिक शासन के अच्छे-बुरे कार्यो को समझने लगेंगें जिससे वे देश के प्रति अधिक जिम्मेदार होंगे।

भाषाओं का यह द्वन्द शायद जानबूझकर पैदा किया गया ताकि लोग इसी मे उलझे रहे और लोग भी चाहे शहरी हो या ग्रामीण विचार-विमर्श को तैयार ही नहीं। क्या देश के नागरिक होने के नाते यह हमारा भी दायित्य नहीं है कि हम भी सोच-समझकर कार्य करें। सभी राज्यों की अपनी भाषा है उसका विकास होना ही चाहिए लेकिन क्या राष्ट्र स्तर पर अंग्रेजी हमारी भाषा है जिसका हम इतना गुणगान करते है, अगर भावनात्मक रूप से भी देखे तो यह वही अंग्रेजी है जिसे हमारी एकता, अखण्डता, सभ्यता, संस्कृति, हमारी पहचान सभी को बर्बाद करने के उद्देश्य से ही हमारे उपर थोपा गया था। दूसरी तरफ अंग्रेजी हमारी अपनी भाषा नही है जो हमारे विचारो को पंख दे सके, हमारी सोच हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम अंग्रेजी नही हो सकती।

आज हमारी स्थिति ऐसी प्रतीत होती है कि अंग्रेजी के चक्कर में हम कहीं के ना रहे, ना हम अंग्रेजी ठीक से सीख सके, ना अपनी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा को सहेज सकें। क्योंकि हमने अपनी पहचान को ही भुला दिया। हमारी भाषा हमारी पहचान है और अपनी पहचान को भुलाकर हम कितना आगे जाएँगे। हम अंग्रेजी के उपन्यासों को पढकर, फिल्में देखकर देशो की सभ्यता संस्कृति की खूब तारीफ करते है, नकल करते है और अपनी संस्कृति के बारे मे पढ़ना ही नही चाहते। आप एक बार अपने इतिहास, अपनी संस्कृति सभ्यता को पढ़िए तो सही जो विश्व की पुरातन सभ्यताओं में से एक है फिर निष्कर्ष निकालिए सत्य क्या है? वास्तविकता क्या है परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि अपनी भाषा से हमारा जुड़ाव हो। इनके लिए और भी ज्यादा आवश्यक है कि भाषा के द्वन्द को दूर कर अपनी भाषा के साथ-साथ अपने देश की भाषा से जुड़े।

अक्सर लोग बाते करते है चर्चाएँ होती है कि विश्व के सभी विकसित देश वही है जिनकी अपनी भाषा है जिन्होने अपनी भाषा को सुदृढ़ किया है, समुन्नत किया है तथा वे इन वास्तविकता से भली-भाँति परिचित भी है कि अपनी भाषा, देश की भाषा जाने बिना विश्व की किसी भी भाषा को जानना व्यर्थ है। आपकी अपनी भाषा आपके विचार, व्यकित्त्व, अभिव्यक्ति, तार्किक क्षमता को समुन्नत करती है जो दूसरी भाषा में कभी संभव नही है ।

हिन्दी को शासन की भाषा का अधिकार संविधान प्रदत्त है परन्तु आजादी के इतने वर्षो के बाद भी हिन्दी अपनी पहचान हेतु संघर्षरत है। आज भी भारत के कई राज्यों में अंग्रेजी को शासन की भाषा का दर्जा प्राप्त है परन्तु हिन्दी को नहीं; क्या यह सोचने का विषय नही है? क्या राज्य में भी हिन्दी का स्थान अंग्रेजी से उपर नहीं होना चाहिए? क्या आज भी जिन राज्यों में अंग्रेजी को शासन की भाषा का दर्जा प्राप्त है वहाँ के सभी नागरिक अंग्रेजी समझते है? क्या उन राज्यों में भी हिन्दी अंग्रेजी से ज्यादा समझी नही जाती? इन सभी गंभीर मुद्दो पर चिंतन या विचार-विमर्श ही नही किया जाता। पता नही अंग्रेजी के प्रभाव / मानसिकता से हम कब तक उबर पाएगे। जहाँ लोग गलत/ टूटी-फूटी अंग्रेजी लिखना-बोलना पसंद करते है परंतु हिन्दी नही। हिन्दी की ऐसी दुर्दशा सोच से परे है।

केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रीय कार्यालयों मे हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई तरह की प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जा रही है। जिसका विवरण निम्नवत है:

मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु- कार्यालय में

यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है – लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

वर्ष के दौरान मूल रूप से हिन्दी कार्य करने वालें कार्मिको में से उत्कृष्ट 10 कार्मिको को पुरस्कृत किया जाता है । पुरस्कार का विवरण निम्नवत है

(i) प्रथम पुरस्कार (दो पुरस्कार)–प्रति व्यक्ति 5000/-
(ii) द्वितीय पुरस्कार (तीन पुरस्कार)–प्रति व्यक्ति 3000/-
(iii) तृतीय पुरस्कार (पाँच पुरस्कार)–प्रति व्यक्ति 2000/-

हिन्दी भाषा सीखने वाले कार्मिको (जिसमें सहायक अनुभाग अधिकारी भी सम्मिलित है) को उत्तीर्ण होने पर नकद पुरस्कार सहित 12 महीने तक एक वेतन वृद्धि के बराबर राशि प्रदान की जाती हे।

हिन्दी शिक्षण योजना के तहत प्रवीण/ प्राज्ञ/पारंगत / परीक्षा निर्धारित अंको से उतीर्ण होने वाले कार्मिको को भी नकद पुरस्कार तथा निर्धारित अंतिम परीक्षा पास करने पर 12 महीने तक एक वेतन वृद्धि के बराबर राशि दी जाती है।

समय–समय पर प्रोत्साहन हेतु कई कार्यक्रम जैसे, पखवाडा, संगोष्ठी आदि में भी चयनित कार्मिको को पुरस्कृत किया जाता है।

इसी प्रकार कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा कर्मिको को प्रोत्साहित करने हेतु कई तरह के पुरस्कार आदि के प्रावधान किए गए है ताकि सभी कार्मिक हिन्दी मे रूचि के साथ–साथ पुरस्कार का लाभ भी लें।

ध्यातव्य हो कि बच्चे भले ही अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़े लेकिन उनकी क्षमता तभी विकसित होती है जब वे विषयों को समझते है जिसके लिए आवश्यक है कि अपनी भाषा में समझा जाए या समझाया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि घर में अभिभावक बच्चो से अपनी भाषा में बात करें। ठीक उसी प्रकार शासन तभी सफल हो सकता है तथा जनता की भागीदारी तभी सुनिश्चित हो सकती है जब शासन के कार्य अपनी भाषा में तथा सरल शब्दों में जनता तक प्रस्तुत हो। उन्हे शासन को जानने या समझने के लिए किसी अन्य पर निर्भर ना होना पड़े ना ही किसी के विचारो को सुनकर निर्णय लें। यदि शासन सीधे सरल तरीके से अपनी भाषा में जनता तक पहँचेगी तो वे आत्म–निर्भर होंगे तथा किसी से प्रभावित हुए बिना देशहित में निर्णय ले पाएंगे। इसके लिए आवश्यक है कि भाषा के द्वन्द्व को यथाशीघ्र समाप्त किया जाए तथा स्वभाषा को शासन का माध्यम बनाया जाए तथा भाषा के द्वन्द्व से आमजन को मुक्त किया जाए। साथ ही, नागरीक का भी यह दायित्व है कि वे हिंदी के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना एवं पूर्वाग्रह से बचे। हमें यह समझना होगा कि हिंदी को उन्नत व सुदृढ़ करनी है। हमें यह समझना होगा हिंदी हमारे देश को जोड़ती है यह हमारे देश की भावना है और जब तक हम देश से नहीं जुड़ेगे, वैश्विक पटल पर टिकना मुशिक्ल होगा ●

राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है । - अनंत गोपाल शेवड़े

मोबाइल का नशा

संजीव कुमार दुबे
लेखाकार

आज दुनिया के लगभग सभी लोगों के हाथ मे मोबाइल फोन है। लोग यदि कुछ क्षण के लिए भी मोबाइल से दूर हो जाते है तो असहज महसूस करने लगते है या यूँ कहें कि लगभग प्रत्येक व्यक्ति को मोबाइल की लत लग चुकी है।

बेशक मोबाइल फोन हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मोबाइल यंत्रो की दुनियाँ में एक जबरदस्त क्रांति लेकर आया है। शुरु-शुरु में तो हम इसका प्रयोग मुख्यत: बातचीत करने के लिए करते थे, लेकिन आज के इस तकनीक युग में हम लगभग सारे महत्वपूर्ण काम मोबाइल की सहायता से ही घर बैठे- बैठे कर लेते है। मोबाइल के इतने अधिक उपयोग ने हमें इसका गुलाम बना दिया है।

अब हाल यह है कि पल भर के लिए भी हम मोबाइल से दूर नही रह पाते। मोबाइल ऑफ हो जाने पर लोगों के मूड तक ऑफ हो जाते है।

मोबाइल फोन के ज्यादा इस्तेमाल करने से उससे निकलने वाले खतरनाक रेडिएशन से हमें अनेक तरह की बीमारियां घेरती जा रही है। इसका आंखो की रौशनी पर गहरा असर पड़ता है। सरदर्द, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन जैसी अनेक बीमारियों का कारण है ये मोबाइल।

कोई भी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स हमारे लिए लाभकारी हो सकता है यदि उसका सदुपयोग किया जाए। लेकिन मोबाइल का नशा ऐसा सर चढ़कर बोल रहा है कि अपने सामने बैठे व्यक्ति से बात करने के स्थान पर लोग सोशल मीड़िया पर चैट करने में मस्त रहते है।

मोबाइल फोन ने व्यक्ति के जीवन को काफी आसान बना दिया है। आज की बदलती दुनियां में यह संचार का सर्वोतम माध्यम बन गया है। मोबाइल फोन से इंटरनेट के द्वारा हम देश दुनिया सहित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी लेते रहते है। मोबाइल फोन के जरिये हम अपनों से, चाहे वो कितनी भी दूर हो, जुड़े रहते है। यह मनोरंजन का भी एक अच्छा माध्यम बन गया है। आजकल तो इसका उपयोग हम हर तरह के अन्य आवश्यक कार्य जैसे टिकट बुकिंग, तथा शॉपिंग जैसे कार्यो के लिए भी करते है।

हिंदी के राष्ट्रभाषा होने से जहाँ हमें हर्षोल्लास है, वहीं हमारा उत्तरदायित्व भी बहुत बढ़ गया है । – मथुरा प्रसाद दीक्षित

इसके विपरीत उससे हमें काफी नुकसान भी उठाना पड़ता है। मोबाइल में फेसबुक, वाट्सएप जैसे एप्लीकेशन होते है, जिससे हम अधिकांश समय बातचीत तथा अन्य प्रकार से व्यर्थ कर देते है। बच्चों के लिए तो यह अत्यधिक घातक है। वे पढ़ाई पर ध्यान नही दे पाते, और अधिकांश प्रयोग से सरदर्द, अनिद्रा तथा तनाव जैसी बीमारियों से ग्रसित भी हो जाते है।

मोबाइल फोन में सबकुछ आसानी से मिल जाता है। उससे आजकल लोगों की याददाश्त क्षमता कम होती जा रही है। मोबाइल के नशे से समय का काफी दुरूपयोग होता है और समय से सोना और समय से जागना अब काफी कम देखा जाता है।

इसके अलावा बच्चे भी आज मोबाइल फोन से काफी प्रभावित हो रहे है। ऐसा देखा जाता है कि काफी कम उम्र के बच्चे भी कार्टून के दीवाने होते जा रहे है। मोबाइल मे उन बच्चों को अनेक तरह के गेम्स मिल जाते है। अब बच्चे बाहर खेले जाने वाले खेलों से धीरे-धीरे दूर होते जा रहे है। आजकल तो रोते हुए बच्चों को चुप कराने के लिए भी मोबाइल दिया जाता है और उसका इन बच्चो की आंखों पर और स्वास्थ्य पर कितना गहरा असर पड़ता है, यह विचारणीय है। क्योंकि घंटो तक मोबाइल देखना बच्चों पर एक गहरा असर डालता है जैसे : बच्चे धीरे धीरे काफी चिड़चिड़े हो जाते है, वे खुद में ही खोए रहते है और खुद से ही दूर होते चले जाते है।

मोबाइल फोन से हमें सामाजिक, आर्थिक और शारीरिक शांति होती है। सामाजिक नुकसान की बात की जाए तो आज के लोगो ने अपने आप को समाज से अलग कर लिया है और मोबाइल की दुनियां में खो गए है। समाज के लोगों से मिलना जुलना लगभग बंद हो गया है। मिलना भी अब सोशल मिडिया पर ही हो पाता है।

आर्थिक नुकसान की बात की जाए तो मोबाइल फोन पर हजारों का खर्चा होता है। लोग नए-नए मोबाइल फोन पर हजारो- लाखों तक खर्च कर देते है।

शारीरिक क्षति की बात की जाए तो शरीर मे होने वाली अनेक बीमारियों का कारण है यह मोबाइल आंखो की रोशनी कम करने से लेकर इसका प्रभाब याद्दाश्त और एकाग्रता पर भी पड़ता है।

यह मोबाइल का दुष्परिणाम ही है कि व्यक्ति हर समय चाहे वो सड़क पार कर रहा हो, या गाड़ी चला रहा हो मोबाइल का प्रयोग नहीं छोड़ता। इससे आए दिन अनेक दुर्घटना घटित होती रहती है। वो कहते है न कि नशा चाहे शराब का हो या मोबाइल का, खतरनाक ही होता है मोबाइल तब तक सही है, जब तक आप मोबाइल को कंट्रोल कर रहे है। आप उसका सदुपयोग कर रहे है। सही जानकारी और सही चीजों के लिए इसका उपयोग कर रहे है। जिस दिन मोबाइल आपको कंट्रोल करने लगा, तब तो भयंकर नशा है यह। ●

सफलता

मुकेश कुमार - II
लेखाकार

प्रत्येक आदमी अपने जीवन में सफल होना चाहता है, पर ऐसा नहीं हो पाता है। जिसके बहुत से कारण हो सकते है। (i) अपने लक्ष्य के प्रति सजग नही रहना। (ii) जिस चीज के लिए आप सफलता प्राप्त करना चाहते है उसके बारें में पूरी जानकारी नहीं होना। (iii) अपनी सफलता से दूर रहने का मुख्य कारण समय सारणी के अनुसार काम को नही करना और जितनी चाहिए, उतनी कड़ी मेहनत नहीं करना। (iv) जिस चीज के लिए आप तैयारी कर रहे है उसमें कितनी (competition) प्रतिस्पर्धा है, उसके बारे में पूरी जानकारी नहीं रखना। जिससे यह होता है कि हमें कितनी मेहनत करनी है ये जानकारी नहीं हो पाती है और हमलोग क्या करते है कि जो हम तैयारी कर रहे है, उसके लिए हमे और कितना मेहनत करना है वह समझ नहीं आता है, जिसके कारण हम सफल नहीं हो पाते हैं (v) ऐसे भी विद्यार्थी होते है जो अपने उपर भरोसा नहीं कर पाते है और असफल हो जाते है। उपर्युक्त बातों पर ध्यान दिया जाए तो ये पता चलता है कि यही असफल होने का मुख्य कारण है, जिसके कारण हम चिंता करने लगते है, और गलत कदम उठा लेते है।

जो व्यक्ति चिन्ता करते है उसकी जगह पर चिंतन किया जाए तो कुछ अच्छा परिणाम निकल सकता है। कहा गया है कि चिन्ता करने से व्यक्ति में चतुराई की कमी होने लगती है, इसलिए हम कहते है कि अगर आप चिंता करना छोड़ दें और उसके जगह पर आप चिंतन करे और अपने आप से पूछे की मेरे अन्दर क्या कमियाँ है, और उसमें सुधार करने के साथ-साथ कड़ी मेहनत और सच्चे लगन के साथ ईमानदारी पूर्वक मेहनत करें तो सफलता आप को जरुर मिलेगी। कड़ी मेहनत ही सफलता की कुंजी है यह एक प्रसिद्ध कहावत है। हमारे माता-पिता और शिक्षक हम सभी को परिश्रम करने के लिए प्रेरित करते हैं। ताकि हम अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकें। सफलता यह निर्धारित करती है कि आप जीवन मे किस तरह का व्यक्ति बनना चाहते हैं और सफल होने के लिए आप कितने प्रयास कर रहे हैं। बिना मेहनत के या बिना पसीना बहाए किसी को भी सफलता नहीं मिलती है। सफलता उसी को मिलती है जो

अपने लक्ष्य को पाने के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करता है। और कभी भी हार नहीं मानता। यह उस व्यक्ति पर निर्भर है कि वह अपने कार्य को सफल बनाने में किस हद तक अपनी शक्ति लगा रहा है और मेहनत कर रहा हैं । जो लोग आसान तरीके के रास्ते को चुनते है, या अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के शॉर्टकट को चुनते है वह अपनी सफलता के रास्ते को और भी कठिन बनाने चले जाते है। सफलता कोई शॉर्टकट नहीं बल्कि एक सीढ़ी है जिसे एक-एक करके धीरे-धीरे ज्ञान के साथ पाया जाता है। ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो गलत रास्तों का इस्तेमाल करके सफलता पाने की कोशिश करते हैं और कुछ लोग पा भी लेते है परन्तु ऐसी सफलता कुछ ही दिनों के लिए होती है।

अपने लक्ष्यों को पाने के लिए किए गए प्रयासो पर जीत पाना ही सफलता है। हर किसी के जीवन में सफलता का बेहद महत्व है, क्योकि सभी का जीवन काफी चुनौतियों और मुश्किलों से भरा होता है। सफलता एक बार में नहीं मिलती, तमाम प्रयास के बाद ही लोग सफलता अर्जित कर पाते है। इसलिए अपने असफल होने पर कभी भी निराश मत होईए, घबराइये नहीं बल्कि इससे सीख लेकर आगे बढ़ते रहिए और जब तक सफल नही होते तब तक कोशिश करते रहिए और फिर एक दिन आपको सफलता जरुर हासिल होगी।

मैं इस लेख के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में 24 घंटे का दिन होता है। इसी 24 घंटे का उपयोग करके कोई डॉक्टर तो कोइ इंजीनियर बन जाता है, तो कोई देश के राष्ट्रपति, तो कोई देश का प्रधानमंत्री बन जाता है, कोई ऐसा भी व्यक्ति है जो जीवन भर चपरासी बनकर रह जाता है और कई लोग अपने जीवन में कुछ भी नही कर पाते हैं और समाज को किसी प्रकार का योगदान नहीं दे पाते हैं। मुख्य बात यह है कि किसने कितना मेहनत किया और लगातार किया, जो जैसा मेहनत करता है वैसी सफलता मिलती है, लेकिन अपने ऊपर भरोसा जरुर करें। अगर आप अपने ऊपर भरोसा नही करेगे तो सफलता आप के हाथ नहीं लगेगी। अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए, किए गए कठोर प्रयासों पर ही जीत हासिल करना ही असल मायने मे सफलता है। हालाँकि सफलता का अर्थ और महत्व हर किसी के जीवन में अलग-अलग होता है। जैसे कि छात्रों के जीवन में असाइनमेंट पूरा करने से, क्लास में अच्छे अंक लाने से, या फिर अच्छे कॉलेज में एडमशिन लेने और अच्छी नौकरी पाने से होता है। इसी तरह अभिनेता, खिलाड़ी, सरकारी कर्मचारी, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक समेत सभी के जीवन में सफलता के अलग- अलग मायने होते है, जो आपने लक्ष्यो को पूरा करने की और जीतने की इच्छा। इस दुनिया में कोई भी नहीं चाहता कि वह अपने जीवन में असफल हो या फिर हारे जीतने की इच्छा सभी लोग रखते है, लेकिन कई ऐसे लोग है जो सिर्फ इच्छा रखते है परंतु इसके लिए प्रयोग नहीं करते, ऐसे लोगों को सफलता नहीं मिलती है। इसलिए आप लोग भी अपने लक्ष्यों को पाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहिए और बिना रूके आगें बढ़ते रहिए।●

मनुष्य वह है, जो औरों को जीवन देता है

रवि कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

प्रकृति सृष्टि की नियामक है और उसने लगभग करोड़ों प्रकार की विभिन्न प्रजातियों की सृष्टि की है। अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्त्ति लगभग प्रत्येक जीव कर लेता है। चाहे वह विशालकाय व्हेल हो अथवा गज या फिर सूक्ष्मतम अमीबा। अभी तक प्रकृति ने जिन प्राणियों की सृष्टि की है, उनमें मनुष्य का स्थान सर्वोपरि है। सर्वोपरि इस अर्थ में कि प्रकृति ने उसे विवेकशील और मननशील बनाया है, अच्छा-बुरा, हित-अहित, सत्कर्म-दुष्कर्म, उपकार-अपकार आदि सोचने की क्षमता प्रदान की है।

मनुष्य अन्य सभी प्राणियों की अपेक्षा अधिक सामाजिक और भाव प्रवण प्राणी है। मनुष्य की प्रमुख विशेषता यह है कि वह अपने हितों को साधते हुए, दूसरों के हित साधना में भी सहायक होता है। उसी मनुष्य का जीवन सार्थक होता है, जो औरों के हित में कार्य करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे देता है।

अपनी लिखित सभ्यता के आरंभ से ही मनुष्य ने अपनी सहकारी प्रवृति को प्रकट किया है। उसने दूसरे की पीड़ा और दुख-दर्द को समझा है तथा उसे दूर करने की सम्मिलित कोशिश भी की है। केवल जन्म लेना, भौतिक सुखों का भोग करना, दूसरों की इच्छाओं का दमन करते हुए अपनी इच्छाओं को पूर्ण करना और इसी प्रक्रिया मे अपने जीवन को नष्ट कर देना पशु-जीवन से भी बदतर है।

जीवन देने का अर्थ मात्र जीवन या मृत्यु से नहीं है बल्कि ऐसे कर्मों से है जिनसे किसी भी व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ सके। किसी निराश्रित को आश्रय, किसी अनाथ को परिवार, किसी व्याधिग्रस्त को स्वास्थ्य मिल सके। आज के युग में हर कोई किसी न किसी दुविधा में फंसा है, उसे सहारा देना, उसे सही राह दिखाना और उसके दुखों को साझा करना भी उसे जीवन देने के समान ही है।

इन तथ्यों के कई उदाहरण है उनमे से एक उदाहरण हैं भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे अब्दुल कलाम। उन्होंने एक ड्राईवर को आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया, पढ़ाई में उसकी सहायता की, उसके लिए किताबें खरीदीं और यही ड्राईवर आज एक लेक्चरर है अपने विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरणा है। इसी प्रकार से कई ऐसे उदाहरण मिलते है जिन्हें देख कर हम प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते और श्रद्धा में अपना सर झुका देते हैं। इन संदर्भो में कई ऐसे प्रशासनिक अधिकारी भी हैं जो अपनी दिनचर्या के अलावा कई सारे समाज सेवा के कार्यों में रुचि रखते हैं और न जाने कितने बच्चें और परिवार उनसे लाभान्वित हो चुके हैं। इनके अलावा रक्तदान या शरीर का कोई अंग दान करने वाले या भोजन, दवाईयों के रूप में या ऐसे स्थानों पर अपना श्रम या समय देने वाले लोग जहाँ पर लोग अकेले जीवन व्यतीत कर रहे हो जैसे कि वृद्धाश्रम या दिव्यांग बच्चों के निवास स्थल आदि में दूसरो की मदद कर आत्मिक सुख का अनुभव करते है । अन्य लोगों में उत्साह, उमंग, प्रसन्नता बांटने वाले लोगों को ही हम मनुष्य की श्रेणी में रख सकते है क्योंकि चीजों को पाकर जितनी प्रसन्नता होती है उससे कहीं अधिक प्रसन्नता होती है बाँट कर।

आज संपूर्ण मानवता अपने अस्तित्व की लडाई लड़

रही है। मनुष्य ही मनुष्य के लिए घातक बन गया है। उसने अपनी इच्छाओं की पूर्णता के लिए दूसरों की इच्छाओं को दबाना शुरू कर दिया है। उसमें से हिंसा बलात्कार जैसी घटनाएँ मानवता के पतन के ही सूचक है। आज एक देश दूसरे देश को अपनी शक्ति से दबाना चाहता है और इसके लिए परमाणु व हाइड्रोजन बम सदृश विनाशकारी हथियारों को अपनाने लगे है। संपूर्ण विश्व में मनुष्य के बीच वैमनस्यता फैल गई हैं। किसी के भी भीतर मानवीय प्रेम नहीं झलकता। आज पिता-पुत्री के साथ, भाई-बहन के साथ और हवस के शिकार अन्य निरीहों के साथ जो कुकृत्य हो रहे है, वे मनुष्य की मूल प्रकृति में और उनमें पनप रही पाशविक प्रवृति के सूचक है।

भारत भी इन समस्याओं से अछूता नहीं है। यहां लोग आज नितांत स्वार्थी हो गए है। उन्होने अपनी वास्तविक पहचान छोड़ दी है। जिस देश में दधीचि जैसे महाऋषि, अशोक, शिवि, अकबर आदि जैसे राजा और महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद सरस्वती-सदृश "सर्वजन हिताय" की खातिर जान देने वाले व्यक्तियों का आदर्श हो, वहां मानवता के मूल्यों में पतन चिंतनीय है। ध्यातव्य है कि, दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपने शरीर की सभी हड्डियां समर्पित कर दी थी, जबकि राजा शिवि ने एक कबूतर के कारण अपना शरीर समर्पित कर दिया था।

भारत अपनी नीतियों के लिए तो विश्व प्रसिद्ध है, क्योंकि उसने ही संपूर्ण विश्व को यह शिक्षा दी थी कि मनुष्य को हमेशा "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" की बात सोचनी चाहिए। यह भारतीय दर्शन का ही तो अंश है "सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया:

सर्वें भद्राणि पश्यन्तु, माँ कश्चिद दुख भाग भवेत"

और

"परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्"

भारत जैसे देश में, जहाँ का दर्शन इतना महान है वहाँ मनुष्य द्वारा मनुष्यत्व को छोडकर पशुत्व को अपनाया जा रहा है यह चिंतनीय है। मनुष्य का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब उसका नैतिक विकास हो। मनुष्य का सबसे बडा धर्म है दुसरों का हित करना "परहित सरिस धरम नहिं भाई "। अंतत: मनुष्य को अपनी सबसे अच्छी पहचान को कायम रखने के लिए इन पंक्तियों को अवश्य याद रखना चाहिए और गौर कर अमल करना चाहिए।

"मधुबन खुशबू देता है, सागर सावन देता है।
जीना उसका जीना है, जो औरों को जीवन देता है।" ●

सुलेमान राजा की बुद्दिमत्ता

प्रभा कांगरी
वरिष्ठ लेखाकार

इस्राएल का राजा सुलेमान था। उनके पिता दाउद की मृत्यु के बाद सुलेमान गद्दी पर विराजमान हुआ। उसका राज्य बहुत दृढ़ हुआ। राजा सुलेमान ने मिस्र के राजा फिरौन की बेटी से ब्याह कर लिया। वे दाउदपुर में रहने लगे। जब तक उसने अपना भवन और यहोवा का भवन और यरूशलेम के चारों ओर शहरपनाह नहीं बनवाया था तब तक उसको वहीं दाउदपुर में रखा।

सुलेमान राजा परमेश्वर से प्रेम रखता था और अपने पिता दाउद की विधियों पर चलता था। वह उँचे स्थानों पर भी बलि चढ़ाता था और धूप जलाया करता था। राजा गिबोन स्थान को बलि चढ़ाने गया, क्योंकि मुख्य उँचा स्थान वही था, वहाँ की वेदी पर सुलेमान ने एक हजार होमबलि चढाए।

गिबोन स्थान में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलेमान को दर्शन देकर कहा, जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ वह माँग। सुलेमान ने कहा तू अपने दास, मेरे पिता दाउद पर बड़ा करुणा करता रहा। क्योंकि वह अपने को तेरे सम्मुख जानकर तेरे साथ सच्चाई और धर्म और सीधाई से चलता रहा और तुने यहाँ तक उस पर करुणा की थी कि उसे उसकी गद्दी पर बिराजने वाला एक पुत्र दिया है। तुने अपने दास, मेरे पिता दाउद को राजा बनाया है परन्तु मैं छोटा-सा लड़का हूँ जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता। फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगो के मध्य में है जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नही हो सकती। तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए समझाने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूँ। क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके ? इस बात से परमेश्वर ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि तुने न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश माँगा है, परन्तु समझने के लिए विवेक का वरदान माँगा है, इसलिए सुन मै तेरे वचन के अनुसार तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूँ यहाँ तक कि तेरे समान न तो तुझसे पहले कोई कभी हुआ और न बाद मे कोई भी होगा। फिर जो तुने नहीं माँगा, अर्थात् धन और महिमा वह भी मैं तुझे यहां तक देता हूँ कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा। फिर कहा कि यदि तु अपने पिता दाउद के समान मेरे मार्ग में चलता हुआ, मेरी विधियों और आशाओं को मानता रहेगा तो मै तेरे आयु को बढ़ाऊँगा। तब सुलेमान राजा जाग उठा और देखा कि यह स्वप्न था फिर वह यरूशलेम को गया और यहोवा के पाया के संदूक के सामने खड़े होकर दण्डवत किया।

सुलेमान का अदभुत न्याय

उस समय दो वेश्याएँ राजा के पास आई। एक स्त्री न्याय माँग रही थी। दोनों स्त्री एक ही घर में रहती थी दोनो स्त्रियों के एक-एक बच्चे हुए। रात मे एक स्त्री का बालक नीचे दबकर मर गया। तब उसने आधी रात को उठकर जब सभी दासी सो रही थी तब मेरे लड़के को मेरे पास से लेकर अपने पास रख लिया और अपने मरे हुआ बालक को मेरे बगल में लिटा दिया। भोर को जब मैं अपने बालक को दूध पिलाने उठी। तब उसे मरा हुआ पाया। परन्तु जब मैने ध्यान से देखा तो पाया कि वह मेरा पुत्र नही है। तब दूसरी स्त्री ने कहा कि क्यूंकि पुत्र मरा है वह पुत्र तेरा है। परन्तु

उसने मानने से इंकार कर दिया।

तब राजा ने कहा एक तो कहती है जो जीवित है वह मेरा पुत्र है और मरा हुआ तेरा पुत्र है। फिर राजा ने कहा मेरा तलवार लाओ, अत: एक तलवार राजा के सामने लाई गई। तब राजा बोले जीवित बालक के दो टुकड़े करके आधा इसको और आधा उसको दो। तब जीवित बालक के माता का मन अपने बेटे के स्नेह से भर गया और उसने राजा से कहा जीवित बालक उसी को दे, परन्तु उसको किसी भांति न मारे। दुसरी स्त्री ने कहा वह न मेरा हो न तेरा। उसके दो टुकड़े किए जाए। तब राजा ने कहा पहली को जीवित बालक दो क्योंकि उसकी माता वही है। जब राजा ने न्याय किया तब उसकी ख्याति समस्त इस्राएल में फैल गयी और उन्होने राजा को न्यायप्रिय माना क्योंकि उन्होने यह देखा कि उसके मन में न्याय करने के लिए परमेश्वर की बुद्धि है। परमेश्वर ने सुलेमान को बुद्धि दी थी और उसकी समझ बहुत बेहतर सी और उसके हृदय में समुद्र पर मौजूद बालू के कणों के तुल्य अनगिनत गुण दिए। उसकी कीर्ति चारों ओर फैल गई। यह करीब 1046 - 616 ई.पू. की ऐतिहासिक सच्ची घटना है। ●

– विभिन्न स्रोतो से संकलित।

साहित्य के पथ पर हमारा कारवाँ तेजी से बढ़ता जा रहा है । - रामवृक्ष बेनीपुरी

फैसला हो तो ऐसा

शांतिलता सेठी
पर्यवेक्षक

समय के अनुसार हमारी जिन्दगी की गाड़ी भी चलती रहती है। कितनी समस्याएँ आती है, समय के साथ सभी का समाधान भी हो जाता है। समस्या को लेकर जल्दबाजी मे ऐसा कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए जो बाद मे अपने लिए हानिकारक हो और किसी के सामने शर्मिन्दा होना पड़े। और एक बात है सोच समझ कर ऐसा कुछ करना चाहिए जिससे आप एक दृष्टांत बन सकते हो।

जिन्दगी एक अगणित पृष्ठो की किताब है। हर पन्ने में एक महत्वपूर्ण–कहानी है। कहानी मे नायक किंबा नायिका आप ही हो। कहानी मे जैसा रंग भरोगे वैसा ही मजेदार होगा।

कहानी को याद करते–करते मेरी बड़ी बहन की याद आ गई। वह चार संतान की माँ थी। तीन लड़कियां, और चौथे नम्बर पर एक बेटा पैदा हुआ था।

दो बेटी एम–टेक करके सॉफ्यवेयर कंपनी मे नौकरी कर रही है। सबसे बड़ी बेटी–अब अमेरिका में है। मझली बेटी कैलिफोर्निया में है। जब मेरे जीजाजी का देहान्त हुआ तब मेरी बहन पूरी तरह टूट गई थी। लेकिन तीनो बेटियाँ मेरी बहन को अपने पास ले गई और उनको मन मे भी कभी दु:खी नही होने दिया। कभी कोई ऐसी बात नहीं की जिससे मेरी बहन के दिल को दु:ख पहुंचे।

उनका बेटा शशांक बंग्लोर में इंजिनीयरिंग का जॉब कर रहा था। एक प्रोजेक्ट के लिए कंपनी ने शशांक को सिंगापुर भेज दिया। शशांक ने वहां एक लड़की को पसंद कर लिया और शादी भी कर लिया। मेरी बहन जब घर लौटी तो अकेलापन उन्हे काटने को दौड़ा। वह अपने बेटे शशांक की शादी के बारे मे सोचकर मुझे और अपनी तीन बेटियों को घर बुलाई।

उन्होने शशांक की शादी अपनी सहेली प्रमिला की एकलौती बेटी जिनु के साथ करने का फैसला किया। शशांक से बात करने पर उसने बोला मेरी शादी कि चिंता मत करो, मैने शादी कर लिया है। मेरी बहन अपने बेटे की शादी धूम–धाम से करने की सोचती थी। यह सुन कर उनके दिल में एक झटका लगा। अपने पति को खोने से जितना दु:ख नहीं हुआ था, उससे ज्यादा दु:ख तो इस बात से हुआ। फिर भी हम सबने मिल के मेरी बहन को समझाया, जो हुआ, भगवान की इच्छा के अनुसार हुआ। सब कुछ भुला कर बेटा और बहू को घर बुलाकर फिर से वैदिक रीति से शादी कराना अच्छा होगा, ऐसा निर्णय हुआ। एक महीने की छुट्टी लेकर शशांक और बहू घर आये थे। उस एक महीने के समय ने मेरी बहन के लिए इतने सारे मुश्किल खड़े कर दिए कि उसका समाधान करते–करते उसके पास समय ही नहीं बचा। बहु ने माँ के खिलाफ, हमारे खिलाफ शंशाक के कान ऐसे भरे कि शशांक ने मेरी बहन से सारे नाते तोड़ दिये और अपनी बीबी को लेकर बंग्लुरू चला गया। वहां आपार्टमेंट में एक घर ले लिया। जब बहू का पैर भारी हुआ तब बहु की माँ आई थी। लेकिन बहू की माँ की तबियत ठीक नहीं रहती थी, इसलिए बहू की माँ ने मेरी बहन से अपनी बेटी की हुई गलती के लिए माफी मांगी और अपने साथ, उसे बेटे के पास ले गई। मेरी बहन ने जब अपने बेटे को देखा तो उसने सारे गिले–शिकवे भुलाकर बहू–बेटे को गले लगा लिया और उन लोगों के पास रहने

भारतवर्ष के लिए देवनागरी साधारण लिपि हो सकती है और हिंदी ही सर्वसाधारण की भाषा होने के उपयुक्त है । –शारदाचरण मित्र

की हामी भरी। शशांक को एक बेटा हुआ। बेटा एक साल का हुआ। बेटा चलने लगा। जन्म दिन का शुभ अवसर आया। जन्मदिन के लिए चार दिन और बाकी था कि एक दिन शशांक माँ के कमरे में जा कर बोला "माँ कल तुम भुवनेश्वर लौट जाओ, इतने छोटे घर मे रहने में तकलीफ होती है। असल मे बहू के भैया-भाभी और माता-पिता सब आने वाले थे। मेरे ऑफिस से अफसर लोग आएँगे। उनलोगो के बीच तुम्हे अच्छा नहीं लगेगा। पार्टी होने वाली थी पर शंशाक माँ को पार्टी में शामिल नहीं करना चाहता था। माँ को शंशाक की बात से गहरा धक्का लगा। वह सहन नहीं कर सकी और बोली, "हाँ मेरा मन भी इधर नहीं लग रहा है। मुझे घर छोड़ आओ।

शशांक बोला, "माँ कुछ काम है मैं भुवनेश्वर नहीं जाऊँगा।

शशांक ने माँ को फ्लाइट मे बैठा दिया और घर चला गया। एक महिने तक उसने केाई फोन नही किया। जब सास और ससुर अपने घर चले गये तब शशांक को अपनी माँ की याद आई। शशांक और उसकी बीवी माँ को वापस बुलाने के लिए सोचने लगे। उसके बाद शशांक अपनी माँ के पास जा कर पिछली बातों के लिए माफी माँगा और अपने पास ले जाने की बात कही।

बातों-बातों मे शशांक ने अपनी माँ को बोल दिया कि मै आपको मेरे साथ ले जाने के लिए आया हूँ। यहाँ का घर हम बेच देंगे-और जो पैसा मिलेगा, उससे आप के नाम से बंग्लुरू में एक घर खरीद कर सब मिलकर रहेंगे।

अब तुम्हारी बहू फिर से माँ बनने वाली है। एक साल के बाद आप फिर से दादी माँ बन जाओगी। मेरी बहन यह सब सुन रही थी लेकिन उनका दिल अन्दर से रो रहा था। अपने दु:ख को दिल में रखकर मेरी बहन बोली नही बेटा-मै अब तुम्हारे साथ, नहीं जा सकूंगी। मैंने और मेरे पति ने मिलकर एक सुखी परिवार गढ़ा था। अब यह परिवार टूट गया। एक पेड़ में,चार फूल थे-इसलिए पेड़ बहुत सुन्दर दिख रहा था।

मै अब सूखे पेड़ की तरह हूँ लेकिन मैं अकेली कहाँ हूँ? मेरे साथ- मेरे जैसी दस माँ रह रही है। नीचे जो लोग किरायदार थे मैनें निकाल दिया और अब लगभग सत्तर-अस्सी साल की बुजुर्ग माएँ रह रही है। मेरी तरह वे लोग भी अकेले रह रहे थे। बुढ़ापे मे उनकी सेवा कौन करेगा? मैनें जब उन लोगो को देखा और उनके बेटे के बारे में सुना तो मुझे मेरी कही हुई सारी बात याद आ गई। मेरे पास घर है, पैसा है, क्या करुंगी ये सब।

शशांक बोला तुम तो कह रही थी कि सारी संपत्ति मेरे नाम कर दोगी, अब क्या हुआ?

मेरी बहन बोली- हाँ जब तु मेरा बेटा था- तब मै बोली थी- अब समय के साथ सब कुछ बदल गया। मेरे बेटे के लिए मै मेरे पति से लड़ी थी- जिस बेटे को बत्तीस साल तक मैं जिगर का टुकड़ा समझती थी- वह मेरे जिगर से अलग हो कर कहाँ चला गया? अब वह मुझसे कही दूर चला गया, मेरी तीन बेटियाँ है उनके पास भगवान की कृपा से सब कुछ है। मेरी संपत्ति से कुछ भी लेने से उन्होने इन्कार कर दिया है। मेरे खून पसीने से कमाया हुआ जो कुछ है- मै कुपात्र को क्यों दान करु?

बेटा! आज मैं तुझे आजाद करती हूँ - तुम तुम्हारे परिवार के साथ खुशी से रहो।

मेरी बहन को मालूम हो गया कि बहू की माँ अपने बेटे के पास अमेरिका गई है। वह अब नहीं आ सकेगी- उन लोगों को एक काम वाली बाई की जरुरत है। इसलिए अपनी माँ को अपने पास जाने के लिए आया है।

यह सब सुनकर शशांक मेरे पास आया और बोला मौसीजी आप माँ को थोड़ा समझाइए, जो हो गया सो हो गया, मुझे और मेरी पत्नी दोनो को अपनी भूल का एहसास है। माँ यहाँ अकेली कैसे रहेगी - कुछ घटित हो गया तो

कौन जिम्मेदार होगा ? सब कहेंगे बेटे ने माँ को अपने पास नहीं रखा। तुम्हे तो मालूम है– मै माँ से कितना प्यार करता हूँ। माँ जब रात मे अकेली सोती थी मै रात को तीन–तीन बार उठकर माँ को देखता था। आपको तो हमारे घर की सारी बात मालूम है। पिताजी अपने काम मे व्यस्त रहते थे। माँ ने मेरे लिए जितना किया मै उनका शुक्रगुजार हूँ। अब मै चाहता हूँ माँ मेरे साथ मेरे पास रहें। पहले जैसा बेटा था, मैं वैसा बनता चाहता हूँ।

यह बात सुन कर मैं सोची कि शायद समय के साथ–साथ शशांक के मन में कुछ बदलाव आया होगा– इसलिए मैं शशांक को बोली ठीक है, तुम अपने माँ के पास जाओ – मै रात को तुम्हारी माँ से बात करुंगी।

मै शाम को सात बजे अपनी बहन के पास जा रही थी । रास्ते में मैने शशांक को एक लड़की के साथ देखा। शशांक की पत्नी की तरह लग रही थी वह एक कार में बैठी थी । शशांक कार में बैठ कर होटल की ओर जा रहा था। मैने ड्राइवर से कहा कि मुझे वहाँ छोड़ कर तुम होटल जाकर देख आना कि शशांक कितने नम्बर रूम मे रह रहा है। मेरे कहने के अनुसार ड्राइवर पता लगा कर आ गया। यह निश्चित हो गया कि शशांक अपनी पत्नी को साथ लेकर आया है। मैने सोचा यदि माँ को इतना प्यार करता है और बहु ने भी माफी मांग ली है फिर बहु होटल में क्यों रह रही है। यह सोच कर– मेरे मन मे थोड़ा सा भय हुआ। उस रात को मैं जिस इरादे से गई थी उसे मैने पलट दिया और मैने मेरी बहन के साथ ऐसे बात की जिससे शशांक को लगा कि मौसीजी, माँ को समझा रही है। सारे विचार–विमर्श के बाद– मैने शशांक को रात मे माँ के पास रुकने को कहा – लेकिन शशांक राजी नही हुआ। मै शशांक को बोली, ''बेटा! मुझे मालूम है कि तुम क्यों रूकना नहीं चाहते हो।'' यह सब समय का खेल है आने के समय मैने तुम्हें और बहू शिखा को होटल जाते हुए देख लिया था। तुम्हारा इरादा गलत है। अच्छा होगा तुम अपनी पत्नी को लेकर बग्लुरू चले जाओ। यह समय, तुम्हारे लिए अच्छा नही है। मेरी बहन को इस बारे में जब पता चला–अगले दिन सुबह एक वकील को बुलाकर सारी संपति एक अनाथ बच्चे के नाम कर दी–और अपने मकान लक्ष्मी निवास को एक वृद्धाश्रम बना दी। जान पहचान की सभी माएँ जो बेटे से परेशान है उन्हे आश्रम में रखती है। अब घर में लगभग तीन वृद्धा रह रहीं है। उनका सारे खर्च मेरी बहन उठा रही है। उनके तीनो बेटियाँ माँ के इस फैसले मे बेहद खुश है। मेरी बहन लक्ष्मी दुनियाँ में सब के लिए एक उदाहरण बन गई। उनकी बेटियाँ जब भी आती है माँ को सलाम करके बोलती है– "फैसला हो तो ऐसा" ●

जगन्नाथ मंदिर, पुरी

सोनी कुमारी साव
लेखाकार

पुरी का श्री जगन्नाथ मदिर एक हिन्दू मन्दिर है। जो भगवान जगन्नाथ (श्रीकृष्ण) को समर्पित है। यह भारत के ओड़िशा राज्य के तटवर्त्ती शहर पुरी मे स्थित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ 'जगत के स्वामी' होता है। इनकी नगरी ही जगन्नाथ पुरी या पुरी कहलाती है। इस मन्दिर को हिन्दुओं के चार धाम में से एक गिना जाता है। अन्य तीन धाम है दक्षिण मे रामेश्वरम, पश्चिम मे द्वारिका और उत्तर मे बद्रीनाथ।

मन्दिर का निर्माण

गंग वंश काल से प्राप्त हुए प्रमाणों के अनुसार जगन्नाथ पुरी मंदिर का निर्माण कलिंग के राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव ने शुरु कराया था। इस राजा के अपने शासनकाल यानि 1078 से 1148 के बीच मंदिर जगमोहन और विमान भाग का निर्माण कराया था। इसके बाद सन 1197 में ओड़िशा के शासक भीम देव ने इस मंदिर के वर्तमान रुप का निर्माण कराया। माना जाता है कि जगन्नाथ मंदिर मे 1448 से ही पूजा अर्चना की जा रही है। लेकिन इसी वर्ष एक अफगान ने ओडिशा पर आक्रमण किया था और भगवान जगन्नाथ की मूर्तियां और मंदिर को ध्वस्त करवा दिया। लेकिन बाद में राजा रामचन्द्र देव ने जब खुर्दा में अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया तो जगन्नाथ मंदिर और इसकी मूर्तियों को दोबारा प्रतिस्थापित कराया। तभी से इस मंदिर में दर्शन की सुविधा उपलब्ध है।

मंदिर से जुड़ी कथाएँ

इस मंदिर के निर्माण से जुड़ी परम्परागत कथा के अनुसार भगवान जगन्नाथ की नीलमणि से निर्मित मूर्ति एक अगरु वृक्ष के नीचे मिली थी। यह इतनी चकाचौधं करने वाली थी, कि धर्म ने इसे पृथ्वी के नीचे छुपाना चाहा। मालवा नरेश इन्द्रद्युम्न को स्वप्न में यही मूर्ति दिखाई दी थी। तब उसने कड़ी तपस्या की और तब भगवान विष्णु ने उसे बताया कि वह पुरी के समुद्र तट पर जाये जहाँ उसे एक लकड़ी का लट्ठा मिलेगा। उसी लकड़ी से वह मूर्ति का निर्माण कराये। राजा ने ऐसा ही किया और उसे लकड़ी का लट्ठा मिल भी गया। उसके बाद राजा ने कई बढ़ई को बुलवाया लेकिन किसी से उस लकड़ी से मूर्त्ति न बन पाई। फिर भगवान विश्वकर्मा बढ़ई के रुप में उसके (राजा) सामने उपस्थित हुए। किन्तु उन्होने यह शर्त रखी कि वे एक माह

मे मूर्ति तैयार कर देंगे, परन्तु तब तक वह एक कमरे में बंद रहेंगे और राजा या कोई भी उस कमरे के अन्दर नही आये। फिर माह भर कमरे के अन्दर से खट खट की आवाज आती रही लेकिन माह के अन्तिम कुछ दिनों मे आवाज आनी बंद हो गई जिसके कारण राजा और रानी दोनो बैचेन होने लगे कि कहीं बढ़ई को कुछ हो तो नहीं गया। शर्त जानते हुए भी रानी से रहा ना गया और उन्होने माह पूर्ण होने से पहले ही कमरे का द्वार खोल दिया और जब राजा रानी भीतर गये तो बढई नहीं था और भगवान की मूर्ति अधूरी रह गई अभी हाथ बनना बाकी था। राजा के अफसोस करने पर मूर्तिकार ने बताया की यह सब दैववश हुआ है और मूर्तियाँ ऐसे ही स्थापित होकर पूजी जाएँगी। तब वही तीनों जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ मंदिर मे स्थापित की गयी।

चारण परम्परा मे माना जाता है की यहाँ पर भगवान द्वारिकाधीश के अधजले शव आये थे जिन्हे प्राचि मे प्राण त्याग के बाद समुद्र किनारे अग्निदाह दिया गया (किशनजी, बलभद्र और सुभद्रा तीनो को साथ-साथ) पर भरती आते ही समुद्र में उफान आया और तीनों आधे जले शव को बहाकर ले गया, ये शव पुरी मे निकले, पुरी के राजा ने तीनों शव को अलग अलग रथ में रखा (जिंदा आये होते तो एक रथ में होते पर शव थे, इसीलिये अलग रखा गया) शवो को पूरे नगर मे लोगो ने खुद रथो को खींच कर घुमाया और अंत मे जो दारु का लकड़ी शवो के साथ तैर कर आया था उसी की पेटी बनवा के उससे धरती माता को समर्पित किया, आज भी उस परम्परा को निभाया जा रहा है पर बहुत कम लोग इस तथ्य को जानते है, ज्यादातर लोग ऐसा मानते है कि भगवान जिन्दा यहाँ पधारे थे, चारण जगदम्बा सोनल आई के गुरू पूज्य दौलतदान बापू की हस्तप्रतो मे भी यह उल्लेख मिलता है।

मंदिर का ढाँचा

मंदिर का वृध्त क्षेत्र 400,000 वर्ग फुट (37000 मीटर) में फैला हुआ है और चहारदीवारी से घिरा है। कलिंग शैली के मंदिर, स्थापत्यकला और शिल्प के आश्चर्यजनक प्रयोग से परिपूर्ण, यह मंदिर, भारत के भव्यतम स्मारक, स्थलों में से एक है।

मुख्य मंदिर वक्र रेखीय आकार का है, जिसके शिखर पर विष्णु का श्री सुदर्शन चक्र (आठ आरां का चक्र) मंडित है। इसे नीलचक्र भी कहते है। यह अष्टधातु से निर्मित और अति पावन और पवित्र माना जाता है। मंदिर का मुख्य ढांचा एक 214 फीट (65 मीटर) उँचे पाषाण चबूतरे पर बना है। इसके भीतर आंतरिक गर्भगृह में मुख्य देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित है। यह भाग इसे घेरे हुए अन्य भागों की अपेक्षा अधिक वर्चस्व वाला है। इससे लगे घेरदार मंदिर की पिरामिडाकार छत और लगे हुए मण्डप, अट्टालिका रूपी मुख्य मंदिर के निकट होते हुए उंचे होते गये है। यह एक पर्वत को घेरे हुए अन्य छोटे पहाडियों तथा फिर छोटे टीलो के समूह रूपी बना है।

मुख्य भवन एक 20 फीट (6.1 मीटर) उँची दीवार से घिरा हुआ है तथा दुसरी दीवार मुख्य मंदिर को घेरती है। एक भव्य सोलह किनारो वाला एकाश्म स्तंभ, मुख्य द्वार के ठीक सामने स्थित है। इसका द्वार दो सिंहों द्वारा रक्षित है।

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा

पुरी रथ यात्रा विश्व प्रसिद्ध है और सिर्फ भारत के ही नही बल्कि दुनिया भर से लोग हर साल इसमे शामिल होते है। रथ यात्रा दूसरे शब्दो में रथ महोत्सव एकमात्र ऐसा दिन है जब भक्तो को मंदिर मे जाने की अनुमति नहीं है, उन्हे देवताओं को देखने का मौका मिल सकता है। यह पर्व समानता और एकता का प्रतीक है। ये देवताओ, भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और उनकी बहन सुभद्रा की मंदिर के भीतर पूजा की जाती है इस त्यौहार पर उन्हें पुरी की सड़को पर ले जाया जाता है ताकि सभी को उन्हें देखने का सौभाग्य प्राप्त हो सके।

तीनो देवता भगवान जगन्नाथ मंदिर से 2 किलोमीटर दूर अपनी चाची के मंदिर (गुंडिचा मंदिर) की वार्षिक यात्रा करते है। त्यौहार की शुरुआत सुबह के आह्वान समारोह के साथ होती है और दोपहर में पुरी की सड़को पर चलने वाला रथ उत्सव का सबसे रोमांचक हिस्सा होता है। तीन देवताओं के तीन अलग-अलग रथ है-भगवान जगन्नाथ, नंदीघोष के रथ मे 18 पहिए है और 45.6 फीट ऊँचा है। भगवान बलभद्र के रथ, तालध्वज में 16 पहिए है और 45 फीट ऊँचा है और सुभद्रा, देवदलन के रथ में 14 पहिए है और 44.6 फीट ऊँचा है। हर साल नए लकड़ी से रथ का निर्माण किया जाता है। इन तीनो देवताओं की मूर्तियाँ भी लकड़ी से बनी है और हर 12 साल मे इनकी जगह धार्मिक रुप से नई मूर्तियाँ बनाई जाती है।

इस मंदिर की कुछ विशेष मान्यताएँ है जिसके कारण पर्यटक जगन्नाथ पुरी मंदिर का दर्शन करने के लिऐ आते हैं।

जगन्नाथ मंदिर की विशेषता यह है की मंदिर के ऊपर लगा झंडा हमेशा हवा के ऊलटी दिशा मे लहराता है। ऐसा प्राचीन काल से हो रहा है लेकिन अभी तक इसके पीछे के वैज्ञानिक कारणो के बारे में पता नही चल पाया है। श्रद्धालुओं के लिए यह सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक बात है।

जगन्नाथ मंदिर के शीर्ष पर सुदर्शन चक्र लगा हुआ है। यह अष्टधातु से बना है, इसे नीलचक्र के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन इसकी विशेषता यह है की किसी भी स्थान से खडे होकर इस चक्र को देखे वह हमेशा आपको आपने सामने ही दिखायी देगा यह वास्तव मे आश्चर्य का विषय है, जो इसे खास भी बनाता है।

मंदिर के ऊपर लगा झंडा रोजाना शाम को बदला जाता है। खास बात यह है कि इसे बदलने वाला व्यक्ति ऊलटा चढ़कर झंडे को बदलता है। जिस समय झंडा बदला जाता है, मंदिर के प्रागंण में इस दृश्य को देखने वालो की भारी भीड़ जमा होती है। झंडे के ऊपर भगवान शिव का चंद्र बना होता है।

मंदिर परिसर मे पुजारियों द्वारा प्रसाद को पकाने का अदभुत और पारंपरिक तरीका है। प्रसाद पकाने के लिए सात बर्तनों को एक दूसरे के ऊपर रखा जाता है और लकड़ी का उपयोग करके इसे पकाया जाता है। ऊपर के बर्तन का प्रसाद सबसे पहले और बाकी अंत मे पकता है।

जगन्नाथ पुरी मे हवा की दिशा मे भी विशेषता देखने को मिलती है। अन्य समुद्री तटो पर प्राय: हवा समुद्र की ओर से जमीन की ओर आती है लेकिन पुरी के समुद्री तटो पर हवा जमीन से समुद्र की ओर आती है। इसके कारण पुरी अनोखा है।

आमतौर पर किसी भी मंदिर के गुंबद की छाया उसके प्रांगण में बनती है। लेकिन जगन्नाथ पुरी मंदिर की सुबह की छाया अदृश्य ही रहती है। मंदिर के सुबह की छाया लोग कभी नही देख पाते है।

वैसे तो हम अक्सर आकाश मे पक्षियों को उड़ते हुए देखते हैं। लेकिन जगन्नाथ मंदिर की विशेषता यह है की इस मंदिर के गुंबद के ऊपर से कोई पक्षी नहीं उड़ता है यहाँ तक कि जहाज भी मंदिर के ऊपर से होकर नहीं गुजरता है अर्थात् भगबान से ऊपर कुछ भी नहीं है। हिन्दू पौराणिक कथाओं मे भोजन को बर्बाद करना एक बुरा संकेत माना जाता है। मंदिर के संचालक इसका अनुसरण करते है। मंदिर जाने वाले लोगो की कुल संख्या हर दिन 2000 से 200000 लोगो के बीच होती है। लेकिन मंदिर का प्रसादम रोजाना इस चमत्कारिक ढ़ंग से तैयार किया जाता है कि कभी भी व्यर्थ नहीं होता है और ना ही कम पड़ता है। इसे प्रभु का चमत्कार माना जाता है। ●

– विभिन्न स्रोतो से संकलित

हिंदी साहित्य की नकल पर कोई साहित्य तैयार नहीं होता । – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

किस्मत का खेल

सुकुमार बेहरा
सेवानिवृत सहायक पर्यवेक्षक

कुछ लोग इस तरह असर कर जातें हैं,
टूटे हुए शीशे में भी खूब नजर आ जाते हैं ।
मिलते तो हैं पल भर के लिए
मगर दिल में हमेशा के लिए उतर जाते हैं ।

श्री हरिप्रसाद जी का एक छोटा सा मकान था। मकान जितना छोटा, परिवार उतना ही बड़ा था। उनके दो बेटों के साथ–साथ दो बेटियाँ उस पर बीमार पत्नी, जिनके इलाज में बहुत पैसा खर्च होता था ।

श्री हरिप्रसाद का कपड़े का छोटा सा कारोबार था। आमदनी के हिसाब से किसी तरह गुजारा चल रहा था। इस बीच उन्होने किसी तरह दोनो बेटियों की शादी बहुत कष्ट से कर दी थी।

इस कारण हरिप्रसाद का बड़ा बेटा मुकेश ज्यादा पढ़ायी नहीं कर पाया। हरिप्रसाद का बड़ा बेटा मुकेश अपने पिता के कारोबार में सहयोग करता था। मगर दूसरा बेटा राहुल ने व्यवसाय प्रबंधन (Business Management) की पढ़ाई किसी तरह पूरा कर लिया था और पढ़ाई समाप्त कर नौकरी की तलाश कर रहा था।

राहुल सभी लड़कों से अलग दिखता था। वो एक सुंदर सा, भीड़ में अलग सा दिखने वाला लड़का था। गोरा रंग और आंखें नीली हमेशा उसका चेहरा खिला हुआ दिखता था। राहुल दिखने में जितना सुंदर था मन का उतना ही भोला और सुशील था। सभी लोगों के साथ उसका अच्छा संपर्क था बड़े बूढ़ों से लेकर छोटे बच्चों के साथ भी अच्छा व्यवहार था।

एक दिन हरिप्रसाद ने राहुल को बुलाकर कहा बेटा पढ़ाई तो तुमने समाप्त कर लिया है अब कुछ छोटा–मोटा काम ही कर लिया करो इस तरह घर पर बैठे रहने से नहीं चलेगा तुम्हें कुछ आमदनी करनी पड़ेगी इसके लिए तुम अपने चाचा जी के घर शहर जाकर कुछ काम काज के बारे में बात कर आओ ।

राहुल ने हामी भरी और सुबह–सुबह ट्रेन पकड़ कर चाचा जी के घर के लिए रवाना हो गया। राहुल के सामने वाली सीट पर एक अमीर आदमी बैठा था। गले में सोने की चैन अँगुलियों में अँगूठी भरी पड़ी थी। उन्हें देख कर राहुल के मन में आया, काश मैं भी इनकी तरह अमीर आदमी होता।

वह बुजुर्ग इंसान राहुल को देख कर मुस्कुराने लगा। बुजुर्ग इंसान का नाम ओमप्रकाश था, वो राहुल से बातें करने लगा।

ओमप्रकाश ने राहुल से पूछा तुम किस गांव के रहने वाले हो और क्या करते हो ? उनकी बातें सुन कर दुखी मन से राहुल ने कहा–चाचाजी मैं गोबिंदपुर गाँव का रहने वाला हूँ और धीरे धीरे राहुल ने अपनी दु:ख भरी जीवन कथा बतला दी। सब कुछ सुनने के बाद चाचा ने राहुल को दिलासा देते हुए कहा भगवान एक न एक दिन तुम्हारी बातें जरूर सुनेंगे मन को इतना छोटा मत करो बेटा।

इतना कहने के बाद चाचाजी बोतल खोल कर पानी पीने लगे। पानी पीते–पीते अचानक ओमप्रकाश जी के छाती में जोरों का दर्द शुरू हो गया । साथ ही, पसीने से लथपथ हो कर सीट पर बेहोश हो गऐ। राहुल के साथ और भी लोग उन्हे को उठा कर उन्हें होश में लाने की कोशिश करने लगे। राहुल बोतल से पानी निकाल उनके चेहरे पर छिड़कने लगा था ।

इतने में ट्रेन एक स्टेशन पर आकर रुक गई। जितने भी लोग उन्हे को होश में लाने की कोशिशें कर रहे थे, सभी उन्हे छोड़कर अपने–अपने रास्ते निकल गए राहुल अकेला ही उनके के पास रह गया। पर राहुल ने हार नहीं मानी।

राहुल दो लोगों की सहायता से ओमप्रकाशजी को ट्रेन से नीचे उतार कर उनको एक अच्छे अस्पताल में ले गया। वहाँ उनका इलाज चलने लगा। राहुल रात भर उनके पास रहकर चाचाजी के होश में आने का इंतजार करने लगा सुबह करीब पांच बजे चाचाजी को होश आया।

चाचाजी राहुल को देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुए। तुम अपना जरूरी काम छोड़ कर मेरे लिए अस्पताल मे रूके, रात भर जाग कर मेरी सेवा की और अस्पताल के रजिस्टर मे अपना पता दे कर मुझे अपना बना लिया। राहुल ने कहा आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है । आप थोड़ा सा और आराम कर ले वो तो आपको अस्पताल में भर्ती करने के समय डॉक्टरो ने आप का पता मुझसे पूछा तो मैंने अपना पता बता दिया। फिर चाचाजी ने अपने लोगों को फोन किया और सारी बातें बतालाकर उन्हें अस्पताल आने को कहा।

अस्पताल का माहौल राहुल को बहुत बैचेन कर रहा था। रात भर न सोने के कारण राहुल के सर में हल्का सा दर्द हो रहा था। इसी बीच अस्पताल के सामने एक बड़ी सी गाड़ी आकार खड़ी हो गई। उनमें से एक सज्जन एक महिला और एक लड़की उतर कर सीधे चाचाजी के पास केबिन की ओर चलने लगे।

राहुल चाचाजी के पास ही बैठा था। चाचाजी को देख कर एक महिला रोने लगी, महिला के रोते ही लड़की भी रोने लगी । चाचाजी ने कहा मिनाक्षी बेटी तुम लोगों को रोने की जरूरत नहीं है। चाचाजी ने उठ कर उन लोगों को सारी बताई। चाचाजी ने राहुल की ओर इशारा कर अपने परिवार के लोगो से कहा, इससे मिलो ये है राहुल बेटा। इसने भगवान का फरिश्ता बन कर मेरी जान बचाई। चाचाजी के बेटे ने आकर राहुल से कहा आपके कारण हमने अपने पापा को जिंदा पाया। आप अगर पिताजी की सहायता नहीं करते तो न जाने आज क्या हो जाता, आप का बहुत बहुत शुक्रिया।

राहुल ने भी हाथ जोड़ कर उन लोगो से कहा ये तो मेरा फर्ज़ था। राहुल की बातें सुन कर मिनाक्षी ने कहा, राहुल जी, आज कल कौन किसके लिए इतना सब करता है। लोगों के पास इतना समय नहीं है कि कोई किसी की मदद करे, आप बहुत ही नेक और अच्छे इंसान हैं।

राहुल मिनाक्षी की बातें सुनकर बोला मिनाक्षी जी आप अगर मेरी जगह होती तो आप भी यही काम करती। फिर राहुल ने चाचाजी के पास आ कर कहा चाचाजी अब आप लोग मुझे इजाजत दीजिए। चाचाजी के साथ सभी लोगों ने राहुल को कहा आप कैसे जा सकते हैं। फिर मिनाक्षी ने कहा आप हमारे साथ हमारे घर चलें उसके बाद ही आप जहां जाना चाहें जा सकते हैं ।

परंतु राहुल ने चाचा जी को समझा बुझा कर सभी लोगों से विदाई ली और अस्पताल से निकल पड़ा।

अस्पताल से निकल कर राहुल अपने बड़े चाचाजी के घर की और रवाना हो गया। बड़े चाचाजी के घर पहुँच कर काम के बारे कुछ बातें की फिर वापस अपने गांव लौट आया।

प्रात: काल सूरज की किरणें धरती को स्पर्श करती हुई अत्यधिक मनोहर और शीतल लगती है। प्रकृति का वो अनोखा नजारा मन को लुभाती है। भोर होते ही कलियाँ खिलने लगती है। चिड़िया मधुर स्वर में गाने लगती हैं सुबह के समय ठंडी-ठंडी हवा चलती है जो लोगों के मन में उत्साह भर देती है। राहुल अपना कसरत समाप्त कर सोफा पर बैठ कर समाचार पत्र पढ़ रहा था ।

ठीक उसी समय एक गाड़ी आकर बाहर रुकी, ये वही गाड़ी थी जिसमे से चाचाजी के परिवार वाले अस्पताल आए थे। गाड़ी से ओमप्रकाश उनका बेटा करन और बेटी मीनाक्षी निकल कर सीधे राहुल के घर की ओर चल दिए उन लोगों को अपने घर की ओर आते देख कर राहुल उन लोगों को घर के अंदर ले आया। इतने में हरिप्रसाद ने भी उनके पास आकर उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

ओमप्रकाश जी ने पहल की, हरिप्रसाद जी आपका बेटा राहुल बहुत ही नेक लड़का है। आपको हीरा जैसा बेटा मिला है। आज जो मैं आपके पास खड़ा हुआ हूं, यह सब राहुल की ही देन है। राहुल मेरे लिए फरिश्ता बनकर आया और मेरा उद्धार किया ।

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित - अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं । - राहुल सांकृत्यायन

मिनाक्षी जो पास ही खड़ी थी आगे आकर उसने हरिप्रसाद जी के पाँव छूकर प्रणाम किया। हरिप्रसाद जी ने अपने हाथ उठा कर आशीर्वाद दिया और कहा बेटी 'सौभाग्यवती भव:!' सदा खुश रहो।

फिर हरिप्रसाद ने दोनों हाथ जोड़कर ओमप्रकाश जी से कहा भाई ये तो आपका बड़प्पन है जो आप मेरे राहुल के बारे में ऐसा कह रहे है । इसी बीच राहुल बाजार जाकर नाश्ता-पानी ले आया और सभी की खातिरदारी की। मीनाक्षी आकर राहुल से बोली पिताजी आपको अपने साथ शहर ले जाने के लिए आए हैं। पिताजी चाहते हैं कि आप हमारे कारोबार में शामिल हो कर काम करेंगे। बड़े भाईसाहब को कारोबार के सिलसिले में अक्सर विदेश आना-जाना पड़ता है। उनके गैरहजारी मे पिताजी को कारोबार का काम करना पड़ता है। मगर अभी पिताजी की तबीयत खराब होने के कारण हमें एक होनहार आदमी की जरूरत है और हम लोगों के नजर मे आपसे ज्यादा होनहार हमें और कोई नजर नहीं आता है। राहुल सारी बातें सुन कर बोला यदि ऐसी बात है तो मैं आप लोगों के साथ जाने के लिए तैयार हूं मगर इसके लिए पिताजी की इजाजत लेनी पड़ेगी।

मिनाक्षी केवल मुस्कुरा कर रह गई । इतने मे हरिप्रसाद जी आकार राहुल से बोले बेटा! मेरी बातों को ध्यान से सुनो तुम्हें कुछ दिनों के लिए ओमप्रकाश के घर जाना पड़ेगा वहाँ तुम्हे उनके कारोबार में हाथ बँटाना पड़ेगा।

ओमप्रकाशजी बहुत ही नेक और भले इंसान हैं वे तुम्हारी माँ को भी अपने साथ ले जाना चाहते हैं और उनका शहर में सही इलाज कराना चाहते हैं। मेरे बहुत मना करने के बावजूद ओमप्रकाश जी नहीं माने। ओमप्रकाश जी की बात मान कर, तुम और तुम्हारी मां दोनो उनके साथ ही चले जाओ। ओमप्रकाश जी बहुत ही अच्छे इंसान हैं। भगवान उनका भला करे ! उनकी लंबी उम्र हो ।

हरिप्रसाद जी की बातें सुन कर मीनाक्षी को बहुत ही अच्छा लगा। शायद मीनाक्षी राहुल से प्यार करने लगी थी। मगर अभी प्यार एकतरफा था।

राहुल को इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। वो तो बस अपने करियर को लेकर व्यस्त था। एक जुनून प्यार का, मीनाक्षी को था तो दुसरा जुनून राहुल को अपने करियर का। दोनों मे जबरदस्त संघर्ष हो रहा था। एक प्यार के लिए संघर्ष कर रहा था तो दूसरा करियर के लिए ।

शहर आकर ओमप्रकाश और उनका बेटा दोनों राहुल की माता जी को एक अच्छे डॉक्टर के पास ले गए। कुछ ही दिनों वह स्वस्थ हो गई। कुछ दिनों तक माताजी को घर में रखने के बाद ओमप्रकाश और उनका बेटा करण उन्हे गाँव छोड़ आए ।

गाँव में हरिप्रसाद बहुत खुश था। पत्नी की बीमारी के कारण वे हमेशा चिंतित रहते थे। मगर पत्नी के स्वस्थ होकर आने के बाद से हरिप्रसाद जी का मन खुश बहुत प्रसन्न था।

इधर शहर आने के बाद से राहुल बहुत खुश था। ओमप्रकाश जी और उनके बेटे ने उसे करोबार में महाप्रबंधक और अकाउंटिंग का काम दे दिया था। राहुल को कुछ ही दिनों में कारोबार की पूरी जानकरी हो गई।

कारोबर को किस तरह चलाना पड़ेगा इसका राहुल को अच्छे से ज्ञान हो गया था. कारोबार किस तरह दोगुना चौगुना उन्नति करेगा इसके लिए राहुल नये-नये तरीके इजात करने लगा था। राहुल बहुत ही मन लगाकर काम करने लगा था। ओमप्रकाश जी और उनके बड़े बेटे से नये काम के बारे मे सहमति लेता रहता था। ओमप्रकाश जी ने अपने बड़े बेटे को पहले ही बता दिया था कि राहुल के काम में कोई बाधा मत डालना राहुल को अपने तरीके से काम करने दो।

इस तरफ मिनाक्षी राहुल का बहुत खयाल रखने लगी थी। सुबह की चाय से शुरू होकर रात का खाना दोनो एक साथ ही खाते थे। राहुल को कारोबार का काम खत्म करते करते देर रात हो जाती थी। रात अधिक हो जाने के कारण घर के सब लोग खाना खा कर सो जाया करते थे मगर मिनाक्षी राहुल का इंतजार करती थी। रात का खाना दोनों साथ ही खाया करते थे।

एक रात की बात है राहुल और मिनाक्षी दोनो जब खाना खा रहे थे। राहुल ने कहा तुम मेरा क्यूँ देर रात तक इंतजार करती हो घर में तो नौकर चाकर है, वे तो मेरा ख्याल रख सकते हैं। मीनाक्षी राहुल की ओर प्यार भरी नजरों से देख कर बोली क्यूँ मैं आपका ठीक से ख्याल नहीं रखती हूँ आपका ख्याल मैं रखती हूँ इसलिए आपको कुछ एतराज है ?

राहुल ने कहा, नहीं नहीं ऐसी कोई बात नहीं है, घर के लोग कहीं हमें खराब नजरों से ना देखे बस इसीलिये मैंने तुम्हें ये बात कही। ये सब बातें ओमप्रकाश जी छुप कर सुन ली थी। ओमप्रकाश जी मन ही मन खुश हो कर सोचने लगे कि मेरी बेटी राहुल को पसंद करती है और इससे आगे का काम मुझे ही करना पड़ेगा।

दूसरे दिन सुबह ओमप्रकाश जी, हरिप्रसाद जी के गाँव की ओर चल दिए। ओमप्रकाश ने हरिप्रसाद और उनकी पत्नी से राहुल और, मीनाक्षी के रिश्ते की बात की।

हरिप्रसाद और उनकी पत्नी के खुशी का कोई ठिकाना ना रहा। हरिप्रसाद और उनकी पत्नी ने हामी भर दी, ओमप्रकाश जी ने एक शर्त रखा, शर्त ये था कि दोनो बच्चों की शादी एक साल के बाद ही होगी। इसका कारण मैं अभी आप लोगों से नहीं कहूंगा, समय आने पर आप लोगों को सब कुछ पता चल जाएगा ।

राहुल का मेहनत रंग लाया, कारोबार में अब दो से चार गुना लाभ होने लगा। इस प्रकार का लाभ ओमप्रकाश की पूरी जिंदगी में नहीं हुआ था राहुल बहुत ही मन लगा कर काम कर रहा था।

राहुल कारोबार को बहुत ही सुंदर ढंग से चला रहा था। ओमप्रकाश बहुत खुश थे। कारोबार में दो से चार गुना लाभ होने लगा । राहुल के पास कारोबार की उन्नती संबधित बहुत योजनाएँ थी । राहुल सिर्फ सही समय की तलाश में था। जो उसे ओमप्रकाश जी के कारोबार मे मिल गया। इसलिए समय बर्बाद न करते हुए कारोबार की उन्नति मे लग गया और उसने वो कर दिखाया जिसकी कल्पना स्वयं ओमप्रकाश जी ने भी नहीं की थी।

समय पंख लगा कर उड़ रहा था। देखते-देखते एक साल बीत गया। एक दिन राहुल ओमप्रकाश जी से बोला चाचाजी, मैं अपने गांव जाना चाहता हूं। ओमप्रकाश जी ने कहा कुछ दिन और ठहर कर गाँव चले जाना, चाचा जी की बातें सुन कर राहुल चुप-चाप अपने काम पर चला गया।

एक दिन की बात है सुबह ओमप्रकाश जी ने मिनाक्षी और राहुल को गाँव भेज दिया। गाँव में उसने देखा कि जहां पर उसका घर हुआ करता था, उस जगह पर तीन मंजिला इमारत खड़ा है। राहुल की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, उसने मिनाक्षी की ओर देख कर कहा, इसी जगह हमारा घर, था मगर न जाने कहाँ चला गया है।

मिनाक्षी बहुत ही शांत स्वर में बोली आप बहुत चिंता कर रहे हैं, चलिए घर के अंदर जा कर देखते हैं। राहुल ने जैसे ही घर का दरवाजा खटखटाया अंदर से पिताजी की आवाज के साथ दरवाजा खुल गया। मीनाक्षी ने राहुल से कहा ये आप ही का घर है इसीलिए आपको पिताजी ने बीच में गाँव नहीं आने दिया क्योंकि घर का काम उस वक्त तक खत्म नहीं हुआ था। घर का पूरा काम खत्म होने के बाद ही आप को पिताजी ने घर जाने की अनुमति दी। आपको इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था मगर मुझे सभी जानकारी थी।

घर के अंदर सब लोग बहुत ही खुश लग रहे थे। हरिप्रसाद ने राहुल को गले से लगा कर कहा, बेटा तुम नहीं जानते हमारा परिवार तुम्हारे कारण कितना खुश हैं। मिनाक्षी को माता जी ने कहा बेटी तुम्हारी ही कमी थी, अब तुम जल्दी से हमारे घर चली आओ । हम सब तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे।

मीनाक्षी राहुल के परिवार को इतना खुश देख कर बहुत खुश हुई। फिर राहुल से बोली अब आप जल्द से जल्द दुल्हा बनकर मेरे घर बारात लेकर आ जाइए । हमारा परिवार बहुत ही बेसब्री से आपको दूल्हे के रूप में देखना चाहता हैं।

राहुल के मुँह से कुछ भी नहीं निकला यह सिर्फ मुस्कुरा कर रह गया। राहुल मन ही मन बहुत ही खुश था। उसने सपने में भी कभी ये सब सोचा नहीं था ।

मिनाक्षी को ड्राइवर के साथ विदा करने के बाद राहुल एकांत में सोचने लगा, कल मैं क्या था और आज मैं क्या हूं कहीं मैं सपने तो नहीं देख रहा हूँ । यह सब किस्मत का खेल है... । ●

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया । – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

मुस्कुराओ भी

प्रदीप कुमार
सहायक लेखा अधिकारी, साई- 5

तुम मुस्कुराते क्यों नही ?
हँसते और हँसाते क्यो नहीं ?
हमेशा कहते हो कि बहुत अभाव है,
क्या सोचा है कभी, जो पास है, उसका क्या भाव है ?
दूसरे का तन, धन, जीवन देख ललचाते हो,
इसीलिए तो मन की शांति नहीं पाते हो।

सुख-दुख का जो मर्म है,
मानव वह तुम्हारा ही कर्म है।
किसी ने की प्रशंसा तो फूल जाते हो,
आलोचना अपनी क्यों नहीं सुन पाते हो ?

देखों तो प्रकृति के जीवो को,
ये कहाँ मुँह लटकाते है ?
चिड़ियाँ गाती है, भौंरे गुनगुनाते है,
फूल खिलखिलाते है, पौधे भी मचल जाते है,
कण कण प्रकृति का उत्सव मनाता है।
तो तुम्हें हँसना क्यों नहीं भाता है ?

मानव देह मिला, शिक्षा मिली और मिला रोजगार,
और अच्छा चल रहा व्यापार,
और-और की भूख ने किस्तो का बोझ बढ़ाया है,
सैलरी अच्छी थी, पर अब आधा हो आया है।
इसी चिंता मे बी.पी., शुगर भी हो आया है।

सुख-दु:ख तो जैसे दिन-रात है,
इसमें घबराने की क्या बात है ?
अगर दु:ख है तो अपनो को बताओ,
अंदर ही अंदर मत घुटते जाओ,
खुशियाँ आये तो बाँटो अपनो में,
हमेशा न खोये रहो सपनो में।

बेलगाम इच्छाएँ ही सुख के चादर को फाड़ती है,
जिंदगी के बाग को उजारती है।
तो इच्छाएँ नियंत्रित क्यों न रहे ?
जिन्दगी खुशियों के फूलो से सुसज्जित क्यों न रहे ?
अपनी उदासी को चेहरे से उतार दो,
जिदंगी छोटी है, इसे मुस्कुरा के गुजार दो। ●

आप जिस तरह से बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए, भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए । – महावीर प्रसाद द्विवेदी

पतझड़

ओम प्रकाश
सहायक लेखा अधिकारी

पतझड़ में झड़ते पत्ते झड़-झड़
कहते गूढ़ तत्व रह – रहकर
एक-एक पत्ते मानो ऐसे झड़ते जाते है,
जैसे जीवन से एक-एक दिन बीतते जाते है।
झड़ते पत्तों का पेड़ कब शोक मनाता है?
क्योंकि त्यागा जो वो सब फिर पा जाता है।

परोपकार भी व्यर्थ कहाँ जाता है?
फिर एक दिन मीठे फल लाकर सुख दे जाता है।
देखो तो पतझड़ को जैसे हो यह अतीत,
न सीख सके तो दुश्मन,
सीखो तो यह एक मीत।
क्योंकि समय एकसा रहता नहीं, यही तो
पतझड़ सिखाता है।

हरा-भरा खुशहाल जगत में सदा कौन रह पाता है?
सुख-दुख है अनित्य, यही पतझड़ सिखाता है।
निराश न हो मन कभी, इसी की प्रेरणा दे जाता है।
जो पत्ते शुद्ध हवा देते थे, झड़कर भी बेकार नहीं होते,
मिट्टी में मिलकर मिट्टी को उर्वरा कर जाते है।
सीखो कैसे ये अपना जीवन सदा परोपकार में बिताते हैं। ●

खुद की तलाश कर पाना मुश्किल है..

शिवानंद

कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग

खुद की तलाश कर पाना मुश्किल है,
खुद से ही बात कर पाना मुश्किल है।
खुद से ही सवाल पूछता हूं मैं,
खुद को जवाब दे पाना मुश्किल है ।

कहाँ हैं, क्यों हैं, कुछ जवाब नहीं,
अपनी ख्वाहिशों का कहीं कुछ हिसाब नहीं।
दुनिया के इशारों पर चलते चले गए,
क्या थे ज़ज्बात मेरे उसकी तो कहीं बात नहीं ।

बिन पानी मछली का जीवन क्या होगा
बिन श्रोता के रागी का गायन क्या होगा?
बंद पिंजरों में सिंहों का गर्जन क्या होगा,
बिन अपनों के ऐश्वर्यों का साधन क्या होगा?

जवाब, सवाल में ही निहित होता है,
सुख, दुख से ही फलित होता है ।
दूरी बढ़ने पर प्रेम और बढ़ता है,
संघर्षों से ही जीवन का रंग चढ़ता है ।

जब समुंदर हो तो कूपों की बात क्या करना,
जो है अंदर ही उसकी तलाश क्या करना!
जो दूर होकर भी रहे हर घड़ी निगाहों में,
उससे दूरी की बात क्या करना ! ●

नि:स्वार्थ चला-कर

विनोद कुमार
लेखाकार

नि:स्वार्थ चला-कर...
जैसे नदियों को प्यास नहीं जल की,
जैसे वृक्षों को आस नहीं फल की,
जैसे धरती को चाह नहीं घर की,
जैसे वीरों को परवाह नहीं कल की,

जैसे सूरज है देता उजाला,
जैसे फसलें हैं देती निवाला,
जैसे मेघ है बरसता अकारण,
जैसे बहती हवाएं हैं प्रतिक्षण,

जैसे खिलते, महकते हैं उपवन,
जैसे देते लकड़ियां हैं सब वन,
जैसे शीतलता देते हैं तरुवर,
जैसे मन को हर लेते हैं निर्झर,

जैसे रास्ते पहुंचाते हैं घर को,
जैसे पर्वत ठहराते बादल को,
जैसे बसंत है भाता हर मन को,
वैसे ही खुशियां बांट तू सबको,
नि:स्वार्थ बहाकर... ●

निजीकरण सही या गलत और राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन योजना की प्रासंगिकता

रवि कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

केंद्रीय वित्त और कॉर्पेरिट मामलों की मंत्री, निर्मला सीतारमण ने 'राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन शुरू की है। एसेट मुद्रीकरण (Asset Monetisation) का अर्थ है सरकार या सार्वजनिक प्राधिकरण के स्वामित्व वाली कंपनियों अथवा परिसंपत्तियों को एक निश्चित समय के लिए निश्चित दामों पर प्राइवेट सेक्टर को ठेके पर देना। नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने कहा कि 2025 तक नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर प्लान का 14 फीसदी हिस्सा यानी 6 लाख करोड़ रुपये रोड, रेलवे और पावर आदि से आएंगे। रेलवे स्टेशन, 15 रेलवे स्टेडियम, ट्रेन, माउंटेन रेलवे बेचे जाएंगे। इसके साथ ही शिपिंग में 9 मेजर पोर्ट बेचे जाएंगे। दो नेशनल स्टेडियम भी इस लिस्ट में हैं। सरकारी कंपनियों के गेस्ट हाउस भी पीपीपी मोड में जाएंगे। अगले चार साल के वार्षिक टारगेट होंगे और रियल टाइम मॉनिटरिंग होंगी। अब आप में से कई लोग ऐसे प्रश्न उठा सकते हैं कि सर भारत में कोरोना से पहले भी कई महामारिया आयीं और बड़ी बड़ी बीमारियां भी आयीं लेकिन कभी भी सरकारों ने इतनी तेजी से अपनी परिसंपत्तियों को नहीं बेचा लेकिन हमें यह भी समझना पड़ेगा कि भारत में ही नहीं संपूर्ण विश्व में पहली बार ऐसी परिस्थितियां आयीं है जिसमें महामारी के कारण लगभग 15 महीने तक पूरी अर्थव्यवस्थाओं को बंद रखना पड़ा । इस पूरी प्रक्रिया और उठापटक को समझने के लिए हमें सबसे पहले यह समझना पड़ेगा कि निजीकरण कितना सही और कितना गलत है ?

पिछले कई दिनों से मेरे पास कई बच्चों के प्रश्न रेलवे निजीकरण के बाद इस संबंध में आए कि निजी करण उचित है या अनुचित तो मेरा मानना है दोस्तों की किसी भी अर्थव्यवस्था में चल अचल संपत्ति अर्थात धन की व्यवस्था तीन प्रारूपों में किसी क्षेत्र विशेष में की जा सकती है जिसे हम पूंजीवादी अर्थव्यवस्था समाजवादी अर्थव्यवस्था और मिश्रित अर्थव्यवस्था के नाम से संबोधित करते हैं। आजादी के बाद से ही भारत ने औपनिवेशिक दानव की छाया से उत्पन्न गरीबी बेरोजगारी महंगाई मंदी आय की असमानता और अवसंरचना की कमी से निजात पाने के लिए और साथ ही पूंजीवादी अमेरिका और समाजवादी रूस के मध्य उत्पन्न शीत युद्ध की समस्याओं के साथ संतुलन स्थापित करते हुए तेजी से विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का समावेश होता है अर्थात उत्पादन के साधनों भूमि, पूंजी, श्रम आदि पर सरकार एवं निजी लोगों दोनों का स्वामित्व होता है और इस प्रक्रिया में सरकार जहां अत्यावश्यक वस्तुओं और सेवाओं जैसे अनाज स्वास्थ्य एवं शिक्षा की राशनिंग न्यूनतम मूल्य पर करते हुए अधिकतम सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करती है वहीं निजी क्षेत्र पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से प्रेरित होते हुए बाकी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिकतम लाभ के दृष्टिकोण से करता है दोस्तों जैसे कोई देश विकसित होता है तो वह प्राथमिक क्षेत्र से द्वितीय एवं तृतीय क्षेत्र पर अपनी निर्भरता बढ़ाता है उसी प्रकार से जब कोई अर्थव्यवस्था विकासशील से विकसित होने के क्रम में आगे बढती है तो सरकार नियमन की तुलना में प्रबंधन की ओर अग्रसर होती है यही

कारण है कि विकसित देशों में अधिकांश सरकारें अपने समाज और लोगों को नियमित करने की तुलना में प्रबंधित करती है यही कारण है कि समकालीन पाश्चायत्य सभ्यताओं और संस्कृतियों में विचारों का खुलापन और व्यापार की स्वतंत्रता अफ्रीकी और एशियाई देशों की तुलना में अधिक देखी जाती है हिंदुस्तान के आलोक में देखें तो निजीकरण का मुद्दा 1991 की एलपीजी पॉलिसी के बाद तेजी से अपनाया जाने लगा और हमारी सरकार मिश्रित अर्थव्यवस्था की प्रणाली अपनाते हुए भी तेजी से पूंजीवाद की ओर बढ़ने लगी दोस्तों निजीकरण का शाब्दिक अर्थ होता है सरकारी और सार्वजनिक संपत्तियों और कंपनियों को अब निजी क्षेत्र के हाथों में सौंप दिया जाएगा। यह पूरा का पूरा भी हो सकता है या फिर आंशिक भी हो सकता है कई बार ऐसा देखा गया है कि कुछ निश्चित समय के लिए ही ऐसा किया जाता है और कई बार केवल प्रबंधन के स्तर पर निजीकरण कर दिया जाता है आर्थिक तंत्र में इसके लिए कई प्रकार के मॉडल उपलब्ध हैं परंतु अगर वर्तमान में भारतीय समाज में असंतोष और निजी करण संबंधी भय की बात करें तो यह पिछले 1 साल से बहुत अधिक मात्रा में बढ़ गया है और खासकर जब सरकार ने हाल ही में रेलवे के निजीकरण की बात को सार्वजनिक रूप से अपनी आम सहमति प्रदान कर दी है तब से लोगों के मध्य निजीकरण को लेकर एक तीखी बहस छिड़ गई है।

दोस्तों अगर भारतीय रेलवे की बात की जाए तो यह भारत सरकार का सबसे बड़ा उपक्रम है जिसमें 13 लाख कर्मचारी कार्य करते हैं भारतीय रेलवे के पास एक लाख 25 हजार किलोमीटर लंबा ट्रैक है जिस पर दौड़ती हुई भारतीय रेलवे भारत सरकार को सालाना 1 लाख 65000 करोड़ रुपए के बराबर आय प्रदान करती है (माल भाड़े से 67% और यात्री किराए से 27 परसेंट इनकम भारतीय

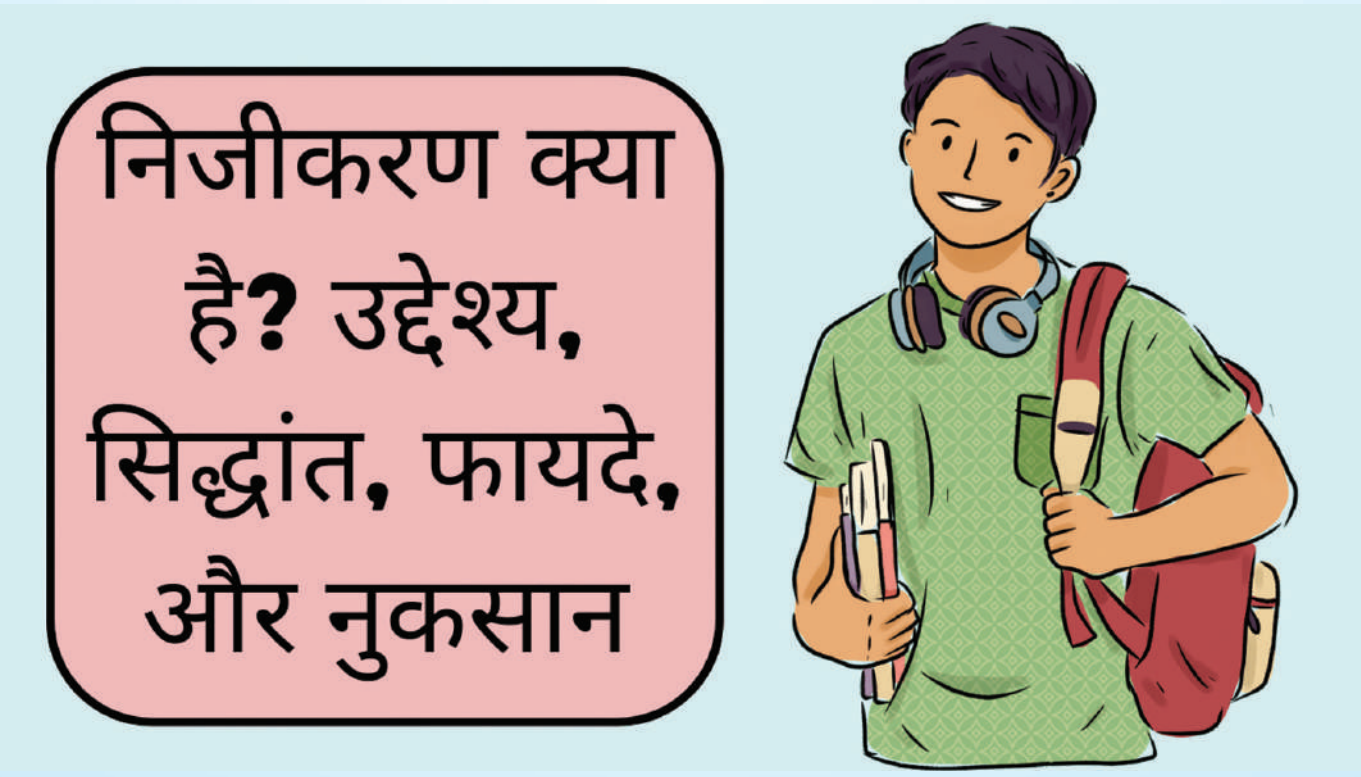

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है । हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है । -नरेन्द्र मोदी

रेलवे को होती है) अर्थतंत्र की रीढ़ की हड्डी कही जाने वाली रेलवे देशभर में फैली पटरियों पर प्रतिदिन 9 हजार 200 मालगाड़ियों के साथ 13,452 पैसेंजर ट्रेनों का संचालन देशभर में फैले 7200 स्टेशनों पर करती है भारतीय रेलवे में प्रतिदिन ढ़ाई करोड़ लोग यात्रा करते हैं जो लगभग ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या के बराबर है। दोस्तों भारत में रेलवे के निजीकरण की वकालत 2015 में विवेक देवरशाय कमेटी के द्वारा की गई थी। अगर निजीकरण के सकारात्मक पक्षों की बात करें तो इससे रेलवे को आधुनिक और सक्षम बनाने में मदद मिलेगी तथा भ्रष्टाचार को खत्म करते हुए जनता की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकेगी। रेलवे स्टेशनों और स्वयं रेलवे स्वच्छ होगी शोध एवम अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा। राजनीतिक बयानबाजी और हस्तक्षेप पर लगाम लगेगी। साथ ही, उपभोक्ता को उसके लागत का शत-प्रतिशत प्रतिफल प्राप्त होगा परंतु अगर हम दूसरी ओर रेलवे के निजीकरण के नकारात्मक पक्षों की बात करें तो इसमें प्रमुख है किराए भाड़े का बढ़ना, रेलवे कर्मचारियों के कार्य और कार्य के घंटो में बढ़ोतरी, निजीकरण के कारण कुछ प्राइवेट कंपनियों का रेलवे में एकाधिकार हो सकता है साथ ही, हो सकता है कि प्राइवेट सेक्टर ऐसी जगहों पर ट्रेने चलाना पसंद ना करें जहां पर कम प्रॉफिट होता है इससे समावेशी और सतत विकास की सरकारी परिकल्पना को धक्का लगेगा। खैर अगर अंत में रेलवे के निजी करण से उत्पन्न समस्याओं की बात करूं तो वह निम्न है – सार्वजनिक उपक्रमों के अनेक लाभ हैं । इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि निजी क्षेत्र की अपेक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के अधिक आर्थिक, सामाजिक लाभ हैं और भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में निजीकरण की कई कठिनाइयाँ हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक और राजनीति न्याय की संकल्पना की गई है। सैद्धांतिक तौर पर इन विचारो के निजीकरण प्रक्रिया से मतभेद होता है। निजीकरण की प्रक्रिया की सबसे बड़ी कठिनाई यूनियन के माध्यम से श्रमिकों की ओर से होने वाला विरोध है वे बड़े पैमाने पर प्रबंधन और कार्य-संस्कृति में परिवर्तन से भयभीत होते हैं।

निजीकरण के पश्चात् कंपनियों की विशुद्ध परिसंपत्ति का प्रयोग सार्वजनिक कार्यों और जनसामान्य के लिये नहीं किया जा सकेगा। निजीकरण द्वारा बड़े उद्योगों को लाभ पहुँचाने के लिये निगमीकरण प्रोत्साहित हो सकता है जिससे धन संकेंद्रण की संभावना बढ़ जाएगी। धन संकेंद्रण और व्यापारिक एकाधिकार की वजह से बाजार में स्वस्थ प्रतियोगिता का अभाव हो सकता है।

कार्यकुशलता औद्योगिक क्षेत्र की समस्याओं का एकमात्र उपाय निजीकरण नहीं है। उसके लिये तो समुचित आर्थिक वातावरण और कार्य संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन होना आवश्यक है। भारत में निजीकरण को अर्थव्यवस्था की वर्तमान सभी समस्याओं का एकमात्र उपाय नहीं माना जा सकता।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर चल रहे व्यापार युद्ध और संरक्षणवादी नीतियों के कारण सरकार के नियंत्रण के अभाव में भारतीय अर्थव्यवस्था पर इनके कुप्रभावों को सीमित कर पाना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। निजीकरण के पश्चात् कंपनियों का तेजी से अंतर्राष्ट्रीयकरण होगा और इन दुष्प्रभावों का प्रभाव भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। । ●

सेवानिवृत्ति लाभ

मनोरंजन पाणिग्राही
बरिष्ठ लेखा अधिकारी

केंद्रीय सरकार के सिविल विभागों से सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों की पेंशन और ग्रेच्युटी, केंद्रीय सिविल सेवाएं नियमावली (पेंशन), 1972 द्वारा विनियमित होती है। रेल कर्मियों एवं सशस्त्र सेना के कर्मियों से संबधित नियमावलियाँ अलग है। सेवानिवृत्ति को उम्र या दुर्बलता के कारण सेवानिवृत्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। केन्द्र सरकार के कर्मचारी को सरकारी सेवा में कार्य करते हुए 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर अथवा सेवानिवृत्ति की आयु से पहले सेवा निवृत्त होने पर भी सेवानिवृत्ति लाभ दिया जाता है। इसके लिए अर्हक सेवा के 20 वर्ष पूर्ण होना आवश्यक है। सेवानिवृत्ति में अपने कर्मचारियों के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के लिए कई प्रकार के सेवानिवृत्ति लाभ देय होते है। सेवानिवृत्ति लाभों को निम्नलिखित श्रेणियों के अनुसार विभाजित किया जाता है।

- पेंशन
- पेंशन का रूपांतरण
- मृत्यु / सेवानिवृत्ति उपादान
- सामान्य भविष्य निधि और प्रोत्साहन राशि
- जमा आधारित संशोधित बीमा योजना
- छुट्टी का नकदीकरण
- केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी समूह बीमा योजना (CGEGIS)
- सेवानिवृत्ति के उपरांत किसी स्थान पर बसने के लिए यात्रा भत्ता

पेंशन

पेंशन प्राप्त करने की पात्रता के लिए न्यूनतम सेवा अवधि 10 वर्ष है। केंद्रीय सरकार का कोई कर्मचारी जो पेंशन नियमावली के अनुसार सेवानिवृत्त होता है, वह न्यूनत्तम 10 वर्ष की अर्हक सेवा पूर्ण करने पर अधिवर्षिता पेंशन प्राप्त करने का हकदार है।

कुटुंब पेंशन के मामले में सरकारी कर्मचारी की विधवा अपने पति की एक वर्ष की निरंतर सेवा पूरी करने के बाद या एक वर्ष से पूर्व भी, यदि सरकारी सेवक का उपयुक्त चिकित्सा अधिकारी द्वारा चिकित्सीय परीक्षण करने के बाद, उसे सरकारी सेवा के योग्य घोषित किया' गया हो, मृत्यु होने पर पेंशन पाने की हकदार है।

01.01.2016 से पेंशन की गणना, औसत परिलब्धियों, नामत: सेवा के विगत 10 महीनों के दौरान मूल वेतन का औसत या अंतिम मूल वेतन, जो भी अधिक हो, के आधार पर की जाती है। 10/20 वर्ष की अर्हक सेवा के साथ पूर्ण पेंशन औसत परिलब्धियों या अंतिम मूल वेतन, जो भी अधिक हो का 50% है। 01.01.2006 से पूर्व, 33 वर्ष से कम की अर्हक सेवा के अनुपात में होती थी। उदाहरण के लिए, यदि कुल अर्हक सेवा 30 वर्ष और 4 माह है। (अर्थात: 61 अर्धवर्ष. तो पेंशन की गण्ना निम्नवत् की जाती है पेंशन राशि – आर/2 (x) 61 / 66

जहाँ आर, अंतिम 10 माह की अर्हक सेवा की औसत परिलब्धियों से अभिप्रेत है।

इस समय, न्यूनतम पेंशन 9000/- रु. प्रतिमाह है। पेंशन की अधिकतम सीमा, भारत सरकार में उच्चतम वेतन (वर्तमान में 1,25,000/- रु.) का 50% प्रतिमाह है। पेंशन, मृत्यु के दिन सहित तक देय है।

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती । –सुभाष चंद्र बोस

पेशन का रूपांतरण

केंद्रीय सरकार के कर्मचारी को दिनांक 01.01.1996 से अपने पेंशन के एक भाग के रूपांतरण, जो 40% से अधिक न हो, के एकमुश्त भुगतान का विकल्प उपलब्ध है। यदि सेवानिवृत्ति के एक वर्ष के भीतर इस विकल्प का उपयोग किया जाता है, तो किसी चिकित्सीय परीक्षण की आवश्यकता नहीं है। यदि एक वर्ष के बाद इस विकल्प का प्रयोग किया जाता है, तो उसे विनिर्धारित सक्षम अधिकारी द्वारा चिकित्सीय परीक्षण करवाना होगा।

देय एकमुश्त राशि की गणना जन्मतिथि के आधार पर तैयार की गई रूपांतरण सारणी के आधार पर की जाती है। मासिक पेंशन में से रूपांतरण भाग घटा दिया जाएगा और पेंशन के रूपांतरण राशि प्राप्त होने की तिथि से 15 वर्षों के बाद रूपांतरण भाग को पुनः जोड़ दिया जाएगा। हालांकि, मंहगाई राहत की गणना, मूल पेंशन के आधार पर (अर्थात् रूपांतरण भाग को घटाए बिना) की जाती रहेगी।

पेंशन के रूपांतरण मान (सी वी पी) की गणना का सूत्र है–

सी वी पी – 40% (x) रूपांतरण गुणांक* (x) 12* रूपांतरण गुणांक, इस विभाग के दिनांक 02.09.2008 के कार्यालय ज्ञापन सं. 38/37/08–पी एंड पी डब्ल्यू (ए) के अनुलग्नक के रूप में नई तालिका के अनुसार, रूपांतरण पूर्ण होने की तिथि की अगली जन्मतिथि के आधार पर निर्धारित होगा।

मृत्यु/ सेवानिवृत्ति उपादान

सेवानिवृत्ति उपदान

यह सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी कर्मचारी को देय है। एक बार एकमुश्त लाभ प्राप्त करने के लिए 5 वर्ष की अर्हक सेवा और सेवा उपदान/पेंशन प्राप्त करने की पात्रता अनिवार्य है। पूरी की गई प्रत्येक छह माह की अवधि सेवानिवृत्ति उपदान की गणना सेवानिवृत्ति से पूर्व मूल मासिक वेतन के एक–चौथाई और आहरित मंहगाई भत्तो

के योग के आधार पर की जाती है। उपादान धनराशि की कोई न्यूनतम सीमा नहीं है। सेवानिवृत्ति उपादान की परिलब्धियों के 16.5 गुना देय है, किंतु अधिकतम सीमा 20 लाख रुपए है।

मृत्यु उपदान

यह सीपीएफ लाभार्थियों सहित सेवाकाल के दौरान स्थायी, स्थायीवत् या अस्थायी सरकारी– कर्मचारी की मृत्यु होने पर उसकी विधवा/विधुर को एक बार देय एकमुश्त लाभ है। इसके लिए मृतक कर्मचारी द्वारा कोई न्यूनतम सेवा अवधि निर्धारित नहीं की गई है। मृत्यु उपादान की हकदारी निम्नवत् है:

अर्हकसेवा	दर
एक वर्ष से कम	परिलब्धियों का 2 गुना
एक वर्ष या अधिक किंतु 5 वर्षों से कम	परिलब्धियों का 6 गुना
5 वर्ष या अधिक किंतु 20 वर्षो से कम	परिलब्धियों का 12 गुना
20 वर्ष या अधिक	पूरी की गई प्रत्येक 2 माह की अर्हक सेवा की परिलब्धियों का आधा, बशर्ते अधिकतम परिलब्धियों का 33 गुना है।

दिनांक 01.01.2016 से मृत्यु उपदान की अधिकतम धनराशि 20 लाख रुपए निर्धारित गई है।

सेवा उपदान

यदि सेवानिवृत्त होने वाले किसी सरकारी कर्मचारी की कुल अर्हक सेवा 10 वर्ष से कम है, तो वह सेवा उपदान पाने का हकदार होगा (पेंशन नहीं)। यह देय राशि, पूर्ण किए गए प्रत्येक छह माह की अवधि के लिए अंतिम आहरित मूल वेतन के आधे के बराबर होगी। इसके लिए कोई न्यूनतम या अधिकतम धनराशि की सीमा नहीं निर्धारित की गई है। एक बार एकमुश्त दिया जाने वाला यह भुगतान, सेवानिवृत्ति उपदान से अलग है और उसके अतिरिक्त दिया जाता है ।

अदेयता (बेबाकी) प्रमाण पत्र जारी किया जाना

कार्यालयाध्यक्ष द्वारा, सेवानिवृत्ति से 2 माह पूर्व सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारी पर सरकारी आवास का लाइसेंस शुल्क, अग्रिम वेतन एवं भत्तों के अधिभुगतान के रूप में बकाया का आकलन करना होता है, और लेखा अधिकारी को सूचित करना होता है, ताकि भुगतान किए जाने से पूर्व सेवानिवृत्ति उपदान से इनकी वसूली की जा सके। इस प्रयोजन के लिए सरकारी आवास में रहने वाले कर्मचारियों के लिए सेवानिवृत्ति के उपरांत नियमानुसार सामान्य किराया पर आवास बनाए रखने की स्वीकृत अवधि तक लाइसेंस शुल्क का आकलन किया जाता है। इस अवधि के उपरांत लाइसेंस शुल्क वसूलने की जिम्मेदारी संपदा निदेशालय की है। यदि किसी कारणवश समय से बकाया का आकलन नहीं किया जा सकता है, तो उपदान की 10% राशि रोक ली जाती है।

सामान्य भविष्य निधि और प्रोत्साहन राशि

सामान्य भविष्य निधि (केंद्रीय सेवा) नियमावली, 1960 के अनुसार एक वर्ष की निरंतर सेवा के उपरांत सभी अस्थायी सरकारी कर्मचारी पुन: नियुक्त सभी पेंशनभोगी (अंशदायी भविष्य निधि के लिए पात्र पेंशनभोगियों को छोड़कर) और सभी स्थायी सरकारी कर्मचारी इस निधि में अंशदान करने के पात्र हैं। अंशदाता की निधि में अंशदान की शुरुआत करते समय, निर्धारित प्रपत्र में एक नामांकन करना होता है, जिसमें वह एक या अधिक व्यक्तियों को अपनी मृत्यु के उपरांत उस निधि के खाते में जमा देय धनराशि या भुगतान नहीं की गई राशि को प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है। अंशदाता को अपनी निलंबन की अवधि को छोड़कर भविष्य निधि में मासिक अंशदान

करना होता है। अधिवर्षिता की तिथि से 3 माह पूर्व भविष्य निधि में अंशदान बंद कर दिया जाता है । न्यूनतम अंशदान की दर अंशदाता की कुल परिलब्धियों का 6% और अधिकतम कुल परिलब्धियों के बराबर होगी। 01.04.2009 से सामान्य भविष्य निधि में जमा राशि पर चक्रवृद्धि ब्याज की दर 8% वार्षिक है और यह दर सरकारी अधिसूचना के अनुसार बदलती है ।

किसी विनिर्दिष्ट प्रयोजनो के लिए निधि से अग्रिम/ निकासी के बारे में नियमावली में उल्लेख किया गया है।

जमा आधारित संशोधित बीमा योजना

सामान्य भविष्य निधि नियमावली के तहत, अंशदाता की मृत्यु होने पर, अंशदाता के खाते में जमा धनराशि को प्राप्त करने वाले अधिकृत व्यक्ति को अंशदाता की मृत्यु के ठीक पहले 3 वर्षों की अवधि के दौरान औसत शेष धनराशि के बराबर अतिरिक्त राशि का भुगतान किया जाएगा, बशर्ते संबंधित नियमों की विनिर्दिष्ट शर्ते पूरी होती हों। उस नियम के तहत दी जाने वाली अतिरिक्त धनराशि 60,000/- रु. से अधिक नहीं होगी। इस लाभ को प्राप्त करने के लिए अंशदाता द्वारा अपनी मृत्यु के समय न्यूनतम वर्ष की सेवा पूरी कर ली होनी चाहिए।

छुट्टी का नकदीकरण

केंद्रीय सिविल सेवा (छुट्टी) नियमावली के तहत छुट्टी के नकदीकरण का लाभ है, पेंशन संबंधी लाभ नहीं। सेवानिवृत्ति के दिन सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी कर्मचारी के खाते में जमा अर्जित छुट्टी /अर्ध–वेतन छुट्टी का नकदीकरण किया जा सकता है, बशर्ते यह अधिकतम 300 दिनों का हो। छुट्टी के नकदीकरण में विलंब के लिए उस नियमावली के तहत किसी ब्याज के भुगतान का प्रावधान नहीं है।

केंद्रीय सरकारी कर्मचारी समूह बीमा योजना

सेवा के दौरान मासिक अंशदान के एक भाग को बचत निधि में जमा किया जाता है, जिस पर ब्याज देय है। सेवा ग्रहण करते समय सरकारी कर्मचारी को उपर्युक्त योजना के प्रपत्र 4 में कार्यालयाध्यक्ष को आवेदन करना होता है, जो अंशदाता द्वारा जमा की गई राशि को ब्याज सहित बचत निधि में भुगतान हेतु स्वीकृति पत्र जारी करेगा और सेवानिवृत्ति के तत्काल बाद उसके वितरण की व्यवस्था करेगा। इस योजना के तहत किया जाने वाला भुगतान लाभ तालिका के आधार पर किया जाता है, जिसमें सेवा समाप्ति के दिन तक के ब्याज का आकलन किया गया है। इस योजना के तहत अंशदाता की मृत्यु होने पर परिवार को बीमा का लाभ मिलता है। इस योजना के तहत किए जाने वाले भुगतान में विलंब के लिए किसी भी ब्याज का भुगतान देय नहीं है।

सेवानिवृत्ति के उपरांत किसी स्थान पर बसने के लिए यात्रा भत्ता

सीटीजी (Composite Travel Grant) सरकार की तरफ से दिया जाने वाला एकमुश्त अनुदान है। इससे रिटायर कर्मचारियों को डयूटी के अंतिम स्टेशन से अपना सामान ले जाने में सहायता मिलती है। सीटीजी पिछले महीनें के मूल वेतन का 80 फीसदी ले सकते है। इसका दावा करने के लिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों को निर्धारित प्रारूप में निवास परिवर्तन के संबंध में स्वघोषण प्रमाणपत्र जमा करना होगा, इसके बाद ही दावे का भुगतान हो सकेगा ।●

संदर्भ : ओड़िशा सिविल सेवा पेंशन नियमावली, 1972, पेंशनर्स पोर्टल

एक ए.सी., एक पेड़ और बहुत सी चिड़ियाँ

अभिषेक कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

न्यू ए.जी. कॉलोनी, भुवनेश्वर, अपनी खूबसूरती और हरियाली के लिए पूरे भुवनेश्वर में एक अलग स्थान रखता है। कॉलोनी के मुख्य प्रवेश द्वार से अंदर आते ही सहसा गाँव की याद आ जाती है। हाँ, क्योंकि गाँव की बहुत सारी विशेषताएँ हमारे न्यू. ए.जी. कॉलोनी में अनायास ही दिख जाती है। जैसे, विविध प्रकार के फलदार वृक्ष, अनेकों प्रकार के फूलों के पेड़-पौधे, वट-वृक्ष, पीपल के पेड़ और एक बड़ा-सा खेल का मैदान जिसके चारों ओर टहलने के लिए एक ठोस रास्ता बना दिया गया है। मैदान के पूर्वी हिस्से में ओपन जिम भी बन चुका है और उत्तर-पूर्वी किनारे पर योग-मंडप भी जिसके चारों कोने पर चार बड़े शानदार वृक्ष छाया प्रदान करते हैं। एक विशाल पूजा मंडप और दक्षिणी-पूर्व भाग में मंदिर है। कुछ सज्जन खाली जगहों में थोडी बहुत खेती भी करते है। चार मंजिला इमारतें और सुनियोजित सड़कें जिनकें किनारे खूब सारे पेड़ हैं,जो एक सुंदर शहरी व्यवस्था के परिचायक हैं।

मैं टाइप-3 क्वार्टर में रहता हूँ। मेरे घर के झरोखे के ठीक सामने एक सागवान का बड़ा-ही हरा-भरा पेड़ है, जो अनेकों चिड़ियों की विश्राम और क्रीड़ा स्थली है। बड़े-बड़े पत्तों से ढ़का यह पेड़ बड़ा ही मनमोहक है। इसके बगल में पीले गुलमोहर का सघन पेड़ है, उसके बगल में बैंगनी फूलों से लदा एक पेड़ है और ठीक उसके बगल में लाल गुलमोहर का पेड़ है। ये तीनों पेड़ एक सुंदर क्रम बनाते हैं और अद्भूत आनंद का अनुभव कराते है। मुझे यहाँ रहते हुए एक साल बीत चुका है। सुबह के ब्रह्म मुहूर्त में चिड़ियों के कलरव से मेरी नींद खुल जाती है और मुझे अलार्म लगाने की जरूरत भी नहीं पड़ती है। छट्टी के दिनों में विशेषकर शनिवार और रविवार की सुबह मैं बालकॉनी में चुपचाप बैठकर भाँति-भाँति की चिड़ियों को देखता हूँ। जैसे, कोयल, हारियल, पपीहा, एक भूरी-सी चिड़िया, बुलबुल, एक पीले रंग की चिड़िया जिसकी चोंच गुलाबी है, और भी बहुत-सी चिड़ियाँ जिनके नाम मैं दुर्भाग्यवश नहीं जानता। हाँ, मैना, तोता, बहुतायत में कौए और कभी-कभी काग भी दिख जाता है। कभी-कभी कुछ शिकारी चिड़िया, चील, बाज भी दिखते है। इन्हें देखते-देखते कब घंटों बीत जाते हैं पता नहीं चलता। इन चिड़ियों को इतनी स्पष्टता से देख पाता हूँ की मन इन्हीं में रम जाता है। हाँ एक बहुत छोटी-सी चिड़िया हम्मिंग-बर्ड जिसे भारत में गुंजन पक्षी कहते हैं। कभी-कभी लुप्त हो रही गौरैया भी दिख जाती है। निर्दोष-सा दिखने वाला फाखता या पेंडुकी भी। हुदहुद, रामचिरैया (नीलकंठ), कठफोरवा आदि। रात में उल्लू और चमगादड़ की उपस्थिति भी आसानी से देखी जा सकती है। औद्योगिक क्रांति के बाद के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि मानव समाज ने सबसे ज्यादा विनाश जंगलों का किया है । जिसके पीछे अनियंत्रित तरीके से जनसंख्या का बढ़ना, अंधाधुंध शहरीकरण आदि मुख्य कारण हैं। आम तौर पर कहा जाता है कि मानवों और जीव-जंतुओं के आधे फेफड़े तो पेड़ों पर टंगे होते हैं। अर्थात, लगभग सभी जीव प्राण वायु ऑक्सिजन के लिए पेड़ों पर ही तो आश्रित हैं। हाल ही में कोरोना महामारी मानव समाज के कमजोर होते फेफड़ों पर हमला करके न जाने कितने खुशहाल परिवारों को हमेशा के लिए उजाड़ चुका है ।

शहरी चकाचौंध और सुख-सुविधा से सम्पन्न घरों का

एक श्याह पक्ष भी किसी से छुपा हुआ नहीं है, जो है जहरीले धुएँ, धूल, गंदे नाले की जहरीली पानी जो भूमिगत जल को जहरीला बनाता जा रहा है। घटता खेतिहर जमीन, घटते जंगल और बढ़ते बड़े-बड़े अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स जिनके परिसर में कुछ सजावटी पेड़ जो बस हरियाली की खाना-पूर्ति मात्र हैं। और अधिक की भूख ने मानव समाज का जितना बुरा किया है, उतना बुरा शायद किसी बड़े वैश्विक युद्ध या महामारी ने भी नहीं किया होगा। वैश्विक होने से बेहतर है, मैं कॉलोनी में ही रहूँ। हाँ, तो मैं बता रहा था एक सुंदर पेड़ और उस पर आने वाले अनेकों पक्षियों के प्रजातियों के बारे में। जिनकी विविधता और सुंदरता का मैं जितना भी वर्णन करूं, कम है। क्योंकि कुछ बातें केवल महसूस की जा सकती है। मैने इन्हें कभी लड़ते नहीं देखा सिवाय कुछ कौवों को जो अपने घोंसलों में पल रहे बच्चों की सुरक्षा के लिए शिकारी चिड़ियों से भिड़ जाते हैं। एक आशियाना पर होता है सब चिड़ियों का आना-जाना, पर न कोई चुगली, न निंदा, न ही कोई कलह। है तो बस एक नियमित दिनचर्या और मधुर संगीत। हम मानव कभी क्षेत्रवाद, कभी जातिवाद तो कभी धर्म के नाम पर झगड़ते रहते हैं। ये पेड़ ही है जो परोपकार के बड़े अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। मैं तो इन्हें देवता की श्रेणी में रखता हूँ जो देता है और बदले में शायद ना के बराबर लेता है। क्योंकि ज्यादातर पेड़ प्रकृति के द्वारा ही पोषित होते हैं।

पेड़ चिचिलाती गर्मी में खुद सूर्य की जलती किरणों को सहकर भी अपने नीचे ठंढी छाया प्रदान करते हैं। मैंने ट्रैफीक पर पेड़ की छांव ढूंढते लोगों को देखा है जो चालाकी से अपनी गाड़ी पेड़ की छांव में ही रोकते हैं। वर्ष 2019 में चक्रवाती तूफान "फनी" ने हमारे कॉलोनी के लगभग 40 प्रतिशत पेड़ों को नष्ट कर दिया था। सरकारी सहायता से तुरंत ही बहुत सारे पेड़ हमारे कॉलोनी में ही नहीं बल्कि पूरे भुवनेश्वर में लगाए गए जो अब बड़े हो रहे हैं। परंतु एक जागृत नागरिक होने का कर्तव्य हमें भी नहीं भूलना चाहिए। इस वर्ष अप्रैल में ही गर्मी ने पिछले सारे रिकार्ड तोड़ डाले हैं। मैदान के किनारे कई छोटे-छोटे आम के पेड़ सुखने के कगार पर थे, पर इनकी परवाह वहाँ नियमित मॉर्निंग वॉक करते लोगों को नहीं थी। तब मैंने कुछ मित्रों की मदद से पानी देकर उन्हें पोषित किया। क्योंकि जो पेड़ आज हमें फल दे रहे हैं उन्हें लगाने वाले कोई और थे जो अब सेवानिवृत हो चुके हैं।

कॉलोनी हो या कार्यस्थल एयर कंडिशन (ए.सी.) आसानी से दिख जाता है, जो गर्मी से तत्काल राहत देता है। जिसकी ठंढी और शीतल हवा कमरे के भीतर अत्यंत सुखद माहौल बनाती है। पर यह सुख सबके लिए सुलभ नहीं है और कई गुणा हानिकारक है। ए.सी. लगाने के लिए लगभग 30 से 40 हजार का खर्च तो आ ही जाता है और फिर हर महीने बिजली बिल भी बढ़ा हुआ आता है। ए.सी. के बारे में एक आम बात जो कोई भी गौर कर सकता है कि यह कमरे या गाड़ी के अंदर तो ठंढ़ी / शीतल हवा देता है पर बाहर काफी गर्म हवा फेंकता है, जो पेड़ पौधो एवं जन-जीवन के लिये काफी नुकसानदायक है। अर्थात ए.सी. अपना काम बनता, भाड़ में जाए जनता वाली मानसिकता पर काम करता है। इसी कारण शायद सुखद होने के बावजूद ए.सी. अभी तक आवश्यक वस्तुओं में सुमार नहीं हो सका है। परंतु अगर परोपकारी पेड़ों की संख्या इसी तरह घटती रही तो स्वार्थी ए.सी. की संख्या को बढ़ने से रोका नहीं जा सकता है। विडंबना यह है कि ए.सी में बैठ कर लोग पर्यावरण संरक्षण कि बड़ी-बड़ी बातें करते है।

ए.सी. के विपरीत पेड़ खुद गर्मी सहते हैं और ठंडी ऑक्सिजन देते हैं। छाया, फल, फूल, खाद देते हैं। निरीह पक्षियों को घर देते हैं। हमारे कॉलोनी में टाइप वन और टाइप-II क्वार्टर की और पेड़ों की संख्या काफी है। क्योंकि वहाँ चार चक्के वाहन कम हैं। वहीं टाइप-III और टाइप-IV क्वार्टर के दो ब्लॉकों के बीच गाड़ियों की संख्या ज्यादा है और पेड़ कम। क्योंकि लोगों ने गाड़ियों की पार्किंग के लिए कंक्रीट की ढलाई करवा रखी है। जहां पेड़ों की संख्या

कम होती जा रही है। गाड़ियों पर पेड़ की सूखी डाली या पत्ते न गिरे, इसीलिए अब पार्किंग को पेड़ मुक्त किया जा रहा है। चक्रवाती तूफान फनी के बाद हमारे कॉलोनी में लगभग एक सप्ताह तक बिजली नहीं आई थी। मई का महीना था और गर्मी से लोगों का बुरा हाल। बिजली के अभाव में बिजली से चलने वाले उपकरण भी काम नहीं आ रहे थे। ऐसे में मेरे कई दोस्त सपरिवार होटल के ए.सी. कमरों में रहने को मजबूर थे। मेरे पूछने पर वे बताते थे कि ए.सी. के बिना उन्हें नींद ही नहीं आती थी। ये वे लोग थे जिन्होने अपने शरीर को ए.सी. का आदी बना दिया था। सामान्य दिनों में अगर कभी रात में आँधी तूफान से बिजली अधिक देर नहीं आती तो इन्हें नींद नहीं आती है। फनी तूफान आने के एक-दो दिन पहले से ही दुकानों पर भीड़ उमड़ पड़ी थी। जहां लोग राशन का सामान जमा करने की जल्दबाजी में थे। लोग मोमबत्ती के लिए मुँहमाँगी कीमत देने को तैयार थे। जब तक मैं दुकान पहुंचा मोमबत्ती का स्टॉक लगभग खत्म हो चुका था। बहुत विनती करने पर दुकानदार ने मुझे 10 रुपये की मोमबत्ती 40 रुपये में देने की बात कही। मैंने मना कर दिया। फिर, मैं घर पहुंचा तो मेरे छोटे साले ने कहा कि सरसों तेल से दिया तो जला ही सकते हैं। इतनी आधारभूत बात मैं भूल चुका था, जिसे गाँव में रहने वाले मेरे साले ने, जो दसवीं का छात्र था, बड़ी आसानी से बता दिया। और शहरी पढ़े-लिखे लोग मोमबत्ती के लिए लाइन में खड़े अपना समय और पैसा बर्बाद कर रहे थे ।

इसी तरह प्रकृति से जुड़ी बड़ी ही सहज बातों की सुध अब सुविधा भोगी लोगों को नहीं रही। मैं सुख-सुविधा का कट्टर विरोधी नहीं हूँ न ही वैज्ञानिक खोजों का। परंतु एक सुधि नागरिक होने के नाते हमें प्रकृति के नियमों का पालन जरूर करना चाहिए, नहीं तो प्रकृति समय-समय पर हमारी उपलब्धियों के गुरूर को मिट्टी में मिलाती रही है। और मिलाती रहेगी। कोरोना महामारी सेगाँव लगभग अछूता रहा क्योंकि गाँव अभी भी प्रकृति की गोद में सुरक्षित है। और शहर वैज्ञानिक उपकरणों का आदी बनता जा रहा है। अब तो लोग बाहर ठंढ़ी हवा के बावजूद खिड़की खोलने की आसान कोशिश नहीं करते है। वरन् ए.सी. चालू रखते हैं, और कार्यस्थल पर तो जहां ए.सी. का बिल स्वयं नहीं देना पड़ता लोग हमेशा ए.सी. पसंद करते हैं। जब मैं दूसरें अनुभाग में कार्यरत था,जहाँ एक बड़े हॉल में लगभग 50 से अधिक लोग काम करते है औरवहाँ पर्याप्त खिड़कियाँ होने के बाबजूद सामान्य तापमान में भी लोग खिड़की नहीं खोलते है।

आज के करीब 70% रोग केवल अनियमित जीवन शैली की उपज है। इस शरीर से जितना शारीरिक काम करना चाहिए उतना नहीं करने के कारण अनेक रोग हो रहे हैं। जबकि अनेकों चिड़ियाँ प्रकृति की गोद में निरोगी जीवन बीता रही है और हमेशा खुश रहती है। और तो और कभी किसी चिड़िया या पशु को ए.सी. की जरूरत नहीं पड़ती। पेड़ों की टहनियों पर बने उनके घोंसले प्राकृतिक ए.सी. से लैस है। चिड़िया और पशु हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का एक मुख्य भाग है। इनकी कम होती संख्या चिंताजनक है। क्योंकि चिड़ियाँ ही कीट-पतंगों की आबादी को नियंत्रित करती है। अगर चिड़ियों की संख्या घटती जाएगी तो कीड़ों-मकोड़ों की संख्या बढ़ेगी फिर फसलों को नुकसान होगा और फिर कीटनाशकों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग अनाजों, सब्जियों को विषैला और भूमि को बंजर, हवा, जल को प्रदूषित और लोगों को बीमार बनाती जाएगी। अगर आने वाली उपरोक्त समस्या को दूर रखना है तो हमें पेड़ों को कटने से बचाना होगा और नए पौधें लगाने होंगे जो घर-घर टंगे ए.सी. से निकलने वाली ग्रीन हाउस गैसों तथा गर्म हवा के दुष्प्रभाव से बचने का एकमात्र उपाय है। ●

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पिता

शुभेन्दु रंजन नायक
सहायक लेखा अधिकारी, पेंशन विभाग

सुबह तीन दिन से टूर पे गए हैं, घर में अकेली है सुनंदा। घर के सारे नौकरों के चले जाने से सुनंदा अकेलापन महसूस कर रही है।

कुछ दिनों से पिताजी की याद आ रही है। माँ के चले जाने से पिताजी की याद मन को सहानुभूति से भर देता है।

शिक्षक की नौकरी में वेतन का कम और अनियमित होना बच्चों की पढ़ाई और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है। पिताजी माँ के रूखेपन से असहाय हो जाते हैं। इससे माँ रो-रोकर अपने किस्मत को कोसती है। लेकिन पिताजी चुपचाप अपने आप में खोए रहते हैं। उनके चेहरे पर खुशी नहीं दिखती। क्या प्रत्येक पिता ऐसा होता है!

धीरे-धीरे हम भाई-बहन बड़े होते गए और खर्च बढ़ता गया और इसके साथ बढ़ती गयी पिताजी की असमर्थता। भाई के मैट्रिक पास करने पर पिताजी चाहते थे कि वो गाँव के कॉलेज में पढे और माँ चाहती थी शहर जाकर पढ़े। माँ बोलती थी, अपने बच्चे मूर्ख रह जाएंगे क्या ?

इतने समझाने पर भी माँ नहीं समझी और भाई

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वह देवनागरी ही हो सकती है –जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

का बड़े कॉलेज में नामांकन हुआ। खर्च बढ़ने लगा। वेतन के अलावा सेविंग भी धीरे-धीरे खत्म होने लगा।

मानसिक और शारीरिक दबाव से पिताजी दुर्बल होने लगे। जब मैं कॉलेज में थी, भाई का कॉलेज खत्म हो गया। वो घर आकर रहने लगा। पिताजी की नौकरी भी खत्म होने वाली थी। भैया के नौकरी के लिए पिताजी बहुत चिंतित थे। बहुत कोशिश के बाद भी उसे नौकरी नहीं मिल रही थी। कुछ दिनों बाद भाई ने नौकरी के लिए 2 लाख रुपये की मांग की जिससे पिताजी स्तब्ध रह गए। माँ भी भाई के पक्ष में थी। गहने बेचकर और पिताजी के जीपीएफ का पैसा भाई को देकर उसके बेकारीपन को दूर किया गया। उस दिन पिताजी बहुत दुखी थे। वे अपने-आप को बार-बार सांत्वना दे रहे थे। धीरे-धीरे पिताजी समय के साथ अपने आप में हारा हुआ महसूस करने लगे।

भाई नौकरी पर चला गया। बीच-बीच में चिट्ठी लिखता था और पैसे भी भेजता था। समय के साथ ये भी कम होने लगा। पिताजी मेरी शादी के लिए भी चिंतित थे। पारिवारिक बोझ से वो धीरे-धीरे पत्थर होते गए।

जिस दिन दहेज के कारण मेरी शादी टूट गई, उस दिन माँ ने पिताजी को काफी खरी-खोटी सुनाई और उठकर चली गई। पिताजी को ऐसा देखकर मैं बहुत दोषी महसूस कर रही थी। और मैं कुछ कर नहीं पा रही थी। शादी तो हो गई। कैसे हुई पता नहीं चला लेकिन माँ जैसे चाहती थी वैसे ही धूम-धाम से हुआ। भाई ने व्यस्तता के कारण कोई मदद नहीं किया।

मेरी विदाई के समय आशीर्वाद देते हुए पिताजी के आँख में आँसू थे। मैं भी व्यस्तता के कारण फिर कम बात करने लगी। फोन करने पर पिताजी कम ही बात करते थे। माँ बोलती थी की उनकी तबियत ठीक नहीं रह रही है। मेरे बाद उनका ख्याल रखना।

कुछ दिनों बाद पिताजी को अकेला छोड़कर माँ चल बसी। उनका देहांत हो गया। मैं शांत बैठे पिताजी को पकड़कर रोने लगी और वो भी रो रहे थे। वे बोल रहे थे कि वो भी मुझे छोड़कर चली गई। इतना कहकर अपना आँसू पोछने लगे।

मरणोपरांत क्रिया-कर्म के बाद सगे-संबंधी वापस चले गए। मैं भी दोषी महसूस कर रही थी। पिताजी को अकेला छोड़कर जाने में। पिताजी ने मुझसे कहा बेटी तेरी माँ को गलत मत समझना। वो हर मुश्किल काम में मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती थी। पिताजी की बात सुनकर मैं स्तब्ध थी। उन दोनों का संबंध मेरे समझ के बाहर था। ●

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता । – आचार्य विनोबा भावे

कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन ।

हिन्दी कार्यशाला

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
हिंदी पखवाड़ा - 2022
समापन समारोह